अक्टूबर-2015 ◆ वर्ष 4 ◆ अंक 5 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०१५

सृष्टि मनोहर रंग-बिरंगी,
हर वस्तु की अलग छवि।
प्रातः उठते ही हर मानव,
आश्चर्यचकित हो देख रवि।
प्रभु की रचना विस्मयकारी,
सत्यार्थप्रकाश में खूब कही।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ 10 ४६

श्रद्धा, भक्ति के लिये शुद्ध हवन सामग्री जरूरी, आत्मिक शांति व प्रभू में आस्था रहेगी पूरी।

(एक उपयोगी संदेश)

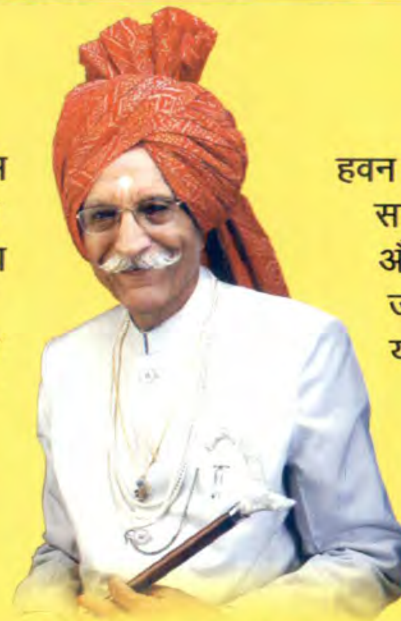

हवन करने की परम्परा :-

हम अपने यहां होने वाले शुभ अवसरों पर अपनी आस्था व संस्कृति के अनुरूप हवन का आयोजन करते हैं यानि कि हर बड़ा काम करने से पहले हवन करते हैं जिससे हमारे सत्कर्मों की सुगन्धि सब दिशाओं में फैले तथा आस पास के वातावरण को भी शुद्ध बनाए।

हवन की उपयोगिता :-

हवन में डाली जाने वाली हवन सामग्री आयुर्वेद के अनुसार औषधि आदि गुणों से युक्त जड़ी बूटियों से बनी हो तो यह अग्नि में पड़कर सर्वत्र व्याप्त हो जाती है, घर के हर कोने में फैलकर रोग के कीटाणुओं का विनाश भी करती है।

हवन के लिए अच्छी हवन सामग्री की जरूरत क्यों ?

हम हवन करने के लिए देसी घी अपनी पसंद के ब्राण्ड के अनुसार खरीदते हैं लेकिन अच्छी हवन सामग्री की जानकारी ना होने के कारण हम हवन सामग्री के लिए दुकानदार भाईयों की पसंद पर निर्भर हो जाते हैं और उन्हीं की पसन्द से हवन सामग्री खरीदते हैं।

एक अच्छी हवन सामग्री उत्तम तकनीक द्वारा शुद्ध, पवित्र एवं प्राकृतिक जड़ी–बूटियों से तैयार की जाती है। मेरा आपसे अनुरोध है कि देसी घी के प्रयोग के साथ साथ एक अच्छी हवन सामग्री का भी प्रयोग करें। इससे आपकी साधना भी पूरी होगी और वातावरण भी शुद्ध होगा।

मेरी ऐसी मान्यता है कि दिन अगर हवन से शुरू हो तो सारा दिन शुभ ही शुभ होता है। इसका जीता जागता उदाहरण मैं स्वयं हूँ क्योंकि मेरी दिनचर्या में हवन सर्वोपरि है। मैं अपने घर व फैक्ट्री में नित्य प्रतिदिन हवन करता हूँ।

आपका शुभेच्छु

महाशय धर्मपाल

सौजन्य : MDH

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	११००० रु.	$ 1000
आजीवन	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय	४०० रु.	$ 100
वार्षिक	१०० रु.	$ 25
एक प्रति	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११६
आश्विन कृष्ण दशमी
विक्रम संवत्
२०७२
दयानन्दाब्द
१९१

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

मर्यादा पुरुषोत्तम की मर्यादा

October- 2015

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

१८वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव ०४

समाचार २७

०५ वेद सुधा
११ राष्ट्रचेता-डॉ. अब्दुल कलाम
१३ ऋषि दयानन्द और हिन्दी साहित्य
१५ दृढ़ निश्चय और समर्पण
१६ सत्यार्थप्रकाश पहेली-२१
१७ It is APJ Abdul Kalam Road
१९ गदर पार्टी के प्रस्तोता
२१ कहाँ गई वो चिट्ठियाँ
२८ कथा सरित
२९ सत्यार्थ-पीयूष
३० स्वास्थ्य- नींद नहीं आती!

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - ५

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

।।ओ३म्।।

१८ वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव

दिनांक ३१ अक्टूबर से २ नवम्बर २०१५

न व ल खा म ह ल उ द य पु र की ए क झ ल क

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वानप्रस्थ, उपदेशकों, भजनोपदेशकों, भजनोपदेशिकाओं के उद्बोधन श्रवण करने का अनुपम लाभ

कृपया ध्यान दें-

चलो उदयपुर

१. उदयपुर रमणीक स्थल है। अतएव यह सत्संग लाभ के अतिरिक्त पर्यटन लाभ का भी अभूतपूर्व अवसर है।

२. अक्टूबर में रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया गर्म वस्त्र व बिस्तर साथ लावें।

३. **अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें**। ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।

४. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। **यह व्यवस्था सशुल्क होगी।**

सम्पर्क : +919829063110

५. **श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है। अपना छोटा-बड़ा अर्थ-सहयोग अवश्य दें।**

चैक या ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के नाम से ही भेजें।

आमन्त्रित अतिथिगण सर्वश्री स्वामी धर्मानन्द जी (आचार्य आर्ष गुरुकुल, आमसेना,उड़ीसा) स्वामी प्रणवानन्द जी (आचार्य गुरुकुल, गौतमनगर, दिल्ली) स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद, सीकर) स्वामी ओम् आनन्द जी (अधिष्ठाता पद्मिनी आर्ष गुरुकुल, चित्तौड़गढ़) स्वामी सदानन्द जी (दयानन्द मठ, दीनानगर) स्वामी आर्यवेश जी (दिल्ली) स्वामी आर्येशानन्द जी (पिण्डवाड़ा) स्वामी शारदानन्द जी (आबू रोड) स्वामी ऋतस्पति जी (होशंगाबाद) साध्वी उत्तमा यति जी (अजमेर) महामहिम आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश) न्यायमूर्ति सज्जन सिंह जी कोठारी (लोकायुक्त, राजस्थान) डॉ. आनन्द चौहान (नई दिल्ली) ठाकुर विक्रम सिंह (नई दिल्ली) विद्यामित्र ठुकराल (नई दिल्ली) डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद, मेरठ) आचार्य अंशुदेव (छत्तीसगढ़) अरुण अब्रोल (मुम्बई) रासा सिंह रावत (अजमेर) विनय आर्य (नई दिल्ली) प्रो. विट्ठल राव (आन्ध्र प्रदेश) सत्यव्रत सामवेदी (जयपुर) दीनदयाल गुप्त (कोलकाता) मिठाई लाल सिंह (मुम्बई) बी. एल. अग्रवाल (जयपुर), जयदेव आर्य (राजकोट), विजय सिंह भाटी (जोधपुर) आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली) आचार्य सोमदेव (मुम्बई) आचार्य वेदप्रिय शास्त्री (केलवाड़ा) डॉ. ज्वलन्त शास्त्री (अमेठी) डॉ. रघुवीर वेदालंकार (नई दिल्ली) आचार्य हरि प्रसाद (गाजियाबाद) डॉ. महावीर मीमांसक (नई दिल्ली) जीववर्द्धन शास्त्री (बांसवाड़ा) आचार्या प्रियम्बदा वेदभारती (नजीबाबाद) आचार्या नन्दिता शास्त्री (वाराणसी) आचार्या सूर्या (शिवगंज) कैलाश कर्मठ (कोलकाता) सत्यपाल सरल (देहरादून) केशवदेव शर्मा (सुमेरपुर) अमर सिंह (व्यावर) पुष्पा शास्त्री (रेवाड़ी) गायत्री पंवार (जयपुर) अंजली आर्या (करनाल)

देश, विदेशस्थ सभी आर्य भाई बहिनों से निवेदन है कि इस पुण्य अवसर पर इष्ट मित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में पधार कर समारोह की शोभा बढ़ावें।

न्यास के बैंक एकाउन्ट का पूर्ण विवरण जिसमें आपका अर्थ-सहयोग प्रार्थित है।

यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल अध्यक्ष	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती न्यासी	अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष	डॉ. अमृतलाल तापड़िया संयुक्त मंत्री एवं संयोजक	भवानीदास आर्य मंत्री
विजय शर्मा उपाध्यक्ष	नारायण मित्तल कोषाध्यक्ष	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल न्यासी	श्रीमती शारदा गुप्ता महिला संयोजिका	एवं समस्त न्यासीगण

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

(0294) 2417694, 09314235101, 09001339836, www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthnyas1@gmail.com

ओ३म्

वेद सुधा

स्वास्थ्य

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
कीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। - ऋग्वेद १०/८५/४२ गतांक से आगे ....

गृहस्थ सुख का दूसरा आधार है अर्थोपार्जन के पवित्र साधन। धन के बिना गृहस्थ जीवन कभी सुखी नहीं हो सकता। वैदिक धर्म की आश्रम मर्यादा के अनुसार केवल गृहस्थ ही धन कमाता है, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी नहीं। उक्त चारों आश्रमों में से केवल गृहस्थ ही कमाता है और वही शेष तीनों आश्रमों का भरण एवं पोषण करता है, इसीलिए गृहस्थ श्रेष्ठ है-

यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्टाश्रमो गृही।। मनु. ३।७८

जिससे गृहस्थ दान और अन्न के द्वारा प्रतिदिन शेष तीनों आश्रमों को धारण करता है इसलिए गृहस्थ ही श्रेष्ठ है।

सर्वेषामपि चैतेषां वेदस्मृतिविधानत:।
गृहस्थ उच्यते श्रेष्ट: त्रीनेतान्बिभर्ति हि।। मनु. ६।८९

वेद और स्मृति के प्रमाण से सब आश्रमों के बीच में गृहस्थाश्रम श्रेष्ट है क्योंकि वही आश्रम अन्य तीनों आश्रमों को धारण करता है। इन प्रमाणों से और लोक व्यवहार से यह सिद्ध होता है कि गृहस्थ ही आर्थिक दृष्टि से तीनों आश्रमों का आधार है। ऋषियों ने ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासी के कर्तव्य कर्म कुछ इस प्रकार के निर्धारित किए हैं कि उनके कार्यक्रमों में अर्थोपार्जन नहीं आता। ब्रह्मचारी अपने शारीरिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास में लगा रहता है। **गुरुकुल चलते हैं राजकोष के सहारे अथवा जनता द्वारा दिए गए धन के सहारे।** महर्षि दयानन्द जी महाराज की शिक्षा पद्धति के अनुसार तो स्वल्पायु बालकों का अर्थोपार्जन के निमित्त कोई कार्य करना अथवा शिक्षा ग्रहण न करना सर्वथा निषिद्ध है। वानप्रस्थ ने जप, तप, स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास द्वारा अपनी खोई हुई शक्तियों को उपार्जित करना है। संन्यास आश्रम में पहुँचकर संन्यासी ने जनकल्याणार्थ भ्रमण करना है। इन दोनों आश्रमों में व्यक्ति ने धन संग्रह नहीं करना है। धन कमाना है तो गृहस्थ ने और धन का संग्रह करना है तो गृहस्थ ने। इसीलिए मनु महाराज ने कहा है-

नात्मानमवमन्येत पूर्वाभिरसमृद्धिभि:।
आमृत्यो: श्रियमन्विच्छेन्नैनां मन्येत दुर्लभाम्।। मनु. ४।१३७

गृहस्थ यदि पहले धनवान हो और फिर निर्धन हो जाए तो उसे अपने आपको घटिया नहीं समझना चाहिए अपितु मृत्युपर्यन्त धन प्राप्ति के लिए यत्न करता रहे और लक्ष्मी को दुर्लभ न समझे।

गृहस्थ के लिए यह आवश्यक है कि वह धन कमाए, परन्तु उसकी कमाई के साधन पवित्र हों।

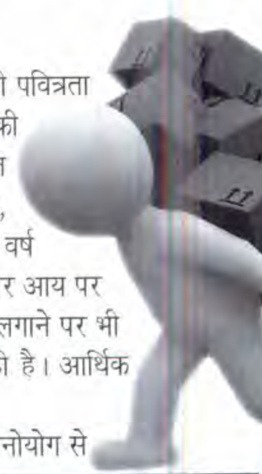

धन कमाने के चार ही साधन हैं- कृषि कर्म, व्यापार, नौकरी और मजदूरी। कृषि कर्म में अर्थ की पवित्रता का यही अभिप्राय है कि श्रमिक का शोषण न किया जाए। उन्हें उचित मजदूरी दी जाए। व्यापारी की आर्थिक पवित्रता यही है कि वह वस्तुओं में मिलावट न करे, वस्तुओं का संग्रह करके अभाव काल में उन्हें महंगे दामों पर न बेचे। यदि ब्याज पर धन लेना देना हो तो एक सौ रुपये पर पच्चीस, चालीस, पचहत्तर पैसे एक रुपया या एक रुपया पच्चीस पैसे से अधिक ब्याज न ले और न दे। सौ वर्ष में भी मूल के दुगुने से अधिक न ले और न दे। जहाँ तक करों के चुकाने का सम्बन्ध है यदि सरकार आय पर वर्तमान दर का पचास फीसदी कर लगाए तो अधिकांश व्यापारी अपना कर चुकायेंगे। आधा कर लगाने पर भी चोरी की संभावना तो रहेगी ही, परन्तु इतनी अधिक चोरी नहीं होगी जितनी कि अब हो रही है। आर्थिक पवित्रता के लिए करों की पूरी अदायगी और ब्याज लेने की हल्की दर भी आवश्यक है।

नौकरी करने वाले की आर्थिक पवित्रता इस बात पर निर्भर है कि वह अपने कर्तव्य कर्म को पूरे मनोयोग से

करे और घूस न ले। श्रमिक की आर्थिक पवित्रता है कि जितना पारिश्रमिक उसे मिले उसके बदले में वह उतना काम करे और जी न चुराए। प्रायः यह देखा जाता है कि जब तक मालिक की दृष्टि रहती है तब तक श्रमिक काम करते हैं और ज्योंही दृष्टि हटी, काम करना छोड़ देते हैं अथवा काम की गति धीमी कर देते हैं। यह भी देखा जाता है कि श्रमिक मालिक के होते हुए भी यथेष्ट गति से कार्य नहीं करते। काम की इच्छा कम और प्राप्ति की इच्छा का अधिक होना भी आर्थिक अपवित्रता के लक्षण हैं।

निर्धनों, अनाथों और विधवाओं का धन छीनना आर्थिक अपवित्रता के बहुत बड़े लक्षण हैं। अपने अधीन श्रमिकों का शोषण भी इसी कोटि में आता है। वकालत का व्यवसाय, जिसका मुख्य आधार ही झूठ है इसे भी मैं आर्थिक दृष्टि से अपवित्र ही समझता हूँ। ऐसा धन अन्त में मनुष्यों के लिए हानिकारक ही होता है। यद्यपि बाह्य दृष्टि से व्यक्ति फूलता फलता दृष्टिगत होता है परन्तु इस प्रकार का धन अन्त में मनुष्य के लिए विनाशकारी ही सिद्ध होता है। मनु महाराज ने लिखा है-

अर्धमेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति।। - मनु. ४।१७४

मनुष्य अधर्म के कारण बढ़ता है और अपनी मान-प्रतिष्ठा को देखता है, अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है।

इस प्रकार आर्थिक पवित्रता गृहस्थ की सुख-समृद्धि के लिए अति आवश्यक है। इसके साथ-साथ गृहस्थ को फिजूल खर्चों से बचना चाहिए। आपातकाल के लिए कुछ संग्रह अवश्य करना चाहिए। जहाँ गृहस्थ को आय के पवित्र साधनों के प्रति जागरूक रहना चाहिए, वहाँ धन के सदुपयोग का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। नास्तिक के लिए धन ही सब कुछ है, परन्तु आस्तिक के लिए ईश्वर के पश्चात् धन का दूसरा स्थान है। फारसी के किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

ऐ जर तू खुदा नेस्त, वलेकिन बखुदा।
सत्तारे अयूबकाजी उल हाजाते।।

हे धन! तू ईश्वर तो नहीं है परन्तु मैं ईश्वर की शपथ उठाकर कहता हूँ कि तू आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला और दुर्गुणों को छिपानेवाला है।

अधिक विस्तार में न जाकर यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि गृहस्थ के लिए धन का बहुत महत्व है। गृहस्थरूपी गाड़ी के दो पहिए होते हैं-माता और पिता। जहाँ माता का कर्तव्य गृह कार्यों को सम्पन्न करना है वहाँ पिता का कार्य धन कमाना है। पिता की कुछ त्रुटियाँ पत्नी और सन्तान के लिए बहुत महंगी पड़ती हैं। पिता का निखट्टू होना, फिजूलखर्च होना, व्यापार में असह्य हानि, पिता का व्यसनी (शराबी, जुआरी, व्यभिचारी) होना, पिछली आयु का विवाह (क्योंकि आयु के अधिक होने पर अर्थ कमाने की क्षमता कम हो जाती है) पिता का लम्बे समय तक रुग्ण रहना और पिता की असामयिक मृत्यु ये सात कारण परिवार की अर्थव्यवस्था को डांवाडोल कर देते हैं।

इनसे पत्नी और सन्तान को अनेक आर्थिक संकट झेलने पड़ते हैं। ये परिस्थितियाँ परिवार के लिए बहुत कष्टकारक होती हैं।

यह तो हुई असामान्य स्थिति की बात। सामान्य स्थिति में गृहस्थ का कर्तव्य है कि जो कुछ वह कमाए उसमें से कुछ अवश्य सुख दुःख के लिए बचाए। यदि गृहस्थ बचत नहीं करता तो सुख-दुःख के समय जब बड़े खर्चे सामने आते हैं तब उसे बहुत कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है। बहुत से परिवार ऐसे हैं जिनमें आय कम होती है और खर्च अधिक। यह भी एक असामान्य स्थिति है। ऐसी स्थिति को छोड़कर सामान्य परिस्थितियों में गृहस्थ का धर्म है कि वह कुछ न कुछ अवश्य जोड़े। कवि के शब्दों में-

कमाया तो तुमने किया खूब काम।
बचाया तो बसमें हुए नेकनाम।।

गृहस्थ में दानशीलता की भावना का होना भी आवश्यक है। दान सत्पात्रों को देना चाहिए। इससे पाखण्डियों और ढोंगियों को पनपने का अवसर नहीं मिलता।

क्रमशः ....

- प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद सदेश)

□□□

आतंक के नए मसीहा

२६ जून २०१५। उत्तरी अफ्रीका के समुद्र तटीय इलाके में अवस्थित ट्यूनीशिया का सोजी शहर। छुट्टियों के दिन सैलानियों की भीड़। एक होटल के प्राईवेट बीच पर आनंद लेते सैलानी। अचानक एक नवयुवक अवतरित होता है और हाथ में पकड़ी क्लाश्निकोव से अंधाधुंध गोलीबारी कर ३८ लोगों की हत्या कर देता है। हाहाकार मच जाता है। पलक झपकते बीच खाली हो जाता है। सुरक्षा कर्मियों द्वारा की गयी जबाबी कार्यवाही में वह युवक मारा जाता है, परन्तु एक प्रश्न सबके समक्ष छोड़ जाता है कि वह कौन था और उसका उद्देश्य क्या था? बच गए लोगों में से कुछ ने बताया कि गोलीबारी शुरू करने से पहले उन्होंने उस युवक को देखा था। उनका कहना था कि वह अनेक लोगों से घुल मिलकर बात कर रहा था, हँस रहा था, मजाक कर रहा था। उसके हाव भाव तथा वर्ताब से ऐसा कतई नहीं लग रहा था कि वह ऐसा जघन्य काण्ड करने जा रहा है। जाँच एजेंसियों का कहना है कि वह जब लोगों से घुल मिल रहा था तो अपने टारगेट तलाश कर रहा था। उसके शिकार में सर्वाधिक ब्रिटिश तथा फ्रेंच नागरिक थे। शूटर का नाम सैफिदीन रेजगी था वह एक छात्र था तथा उसे जानने वाले

यह सोच भी नही सकते थे कि वह कभी भी ऐसा जघन्य कृत्य कर सकता है। यह युवक किस आतंकवादी संगठन से जुड़ा था? जी हाँ, यही है आतंक का नया चेहरा। आतंक के नए मसीहा का दुनिया को पैगाम। **यह है इस्लामिक स्टेट ऑफ सीरिया एंड ईराक अर्थात् आई.एस.आई.एस।**

पिछले कई दशकों में विश्व आतंक के अनेक दंश झेल चुका है फिर भी इस पर नियंत्रण प्राप्त करने की दिशा में किंचित भी सफलता मिली हो ऐसा लगता नहीं। वस्तुतः हर कार्य का कारण होता है जब तक कारण का नाश नहीं होगा तब तक कार्य अर्थात् आतंक का अस्तित्व रहेगा। जिन लोगों को किसी व्यक्ति या समुदाय के अत्याचार का शिकार होना पड़ा उनके द्वारा की गयी विद्रोहस्वरूप कार्यवाही तो समझ में आ भी सकती है यद्यपि वह भी समर्थनीय नहीं है, परन्तु ऐसी कार्यवाही जिसमें जिस किसी भी निर्दोष को मार दिया जाय और इससे भी आगे ऐसे इलाकों में कार्यवाही की जाय जिससे अधिकाधिक लोग हताहत हों इसके पीछे क्या विचारधारा कार्य कर रही है इसका विश्लेषण आवश्यक है। ईश्वर के अस्तित्व, व्यक्ति के चारों ओर स्थापित मान्यताएँ चाहे वह व्यक्ति के स्वयं के आचरण से सम्बंधित हों, उपासना पद्धति से सम्बन्धित हों या सामजिक जीवन से, इनमें विभिन्नताएँ मिलती ही हैं। हर व्यक्ति अपनी तथा अपने समुदाय की सोच को ही सही मानता है और चाहता है कि उसकी जैसी सोच रखने वाले लोगों की संख्या बढ़ती जाय। मानव के मनोविज्ञान को देखें तो यहाँ तक कुछ अजीब नहीं है। आध्यात्मिक,

दार्शनिक, सामाजिक, आदि दृष्टि से एक जैसी सोच वालों को हम मजहब का नाम अगर मोटे तौर पर दे दें तो निष्कर्ष निकलता है कि हर मजहब अपनी वृद्धि चाहता है। परन्तु उसका मार्ग क्या हो यही बात मुख्य है। अगर हम भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो विचारों में भिन्नता रखने वाले समुदायों की यहाँ कमी नहीं रही है, उनमें द्वेष भी रहा है, वाणी तथा लेखनी से विष वमन भी हुआ है इससे इनकार नहीं किया जा सकता, **परन्तु अपवादों को छोड़कर बलात् अपने दर्शन को मनवाने की प्रथा यहाँ नहीं रही।** विचार विनिमय जिसे शास्त्रार्थ भी कहा जाता है भारत भूमि पर प्रिय उपाय रहा है और यही मनुष्य जीवन की शोभा है। **तलवार तथा ताकत के बल पर मजहब प्रसारण की परम्पराएँ सहस्राब्दियों पूर्व भारतेतर विश्व में रही हैं। ईसाइयों के क्रूसेड तथा इस्लाम के जिहाद इसके उदाहरण रहे हैं।**

भारत विभाजन के बाद भारत भूमि पर हुए अधिकांश आतंकवादी आक्रमण पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित रहे जो मजहब प्रसार की अपेक्षा द्वेष तथा राजनीति से प्रेरित रहे हैं। हाँ, आतंकियों को तैयार करने में उन्हें कट्टर बनाने तथा यह विश्वास दिलाने में कि वे अल्लाह का कार्य कर रहे हैं मजहबी मानसिकता का खुल कर प्रयोग किया गया।

यह भी सत्य है कि विश्व भर में बढ़ते जा रहे आतंकी हमलों में धीरे-धीरे मजहबी मानसिकता बढ़ती जा रही है क्योंकि उन्माद की हद को स्पर्श करने वाले आतंकियों को तैयार करने में यही कारगर सिद्ध हो रहा है।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि ओसामा बिन लादेन का अपना कोई साम्राज्य नहीं था, वह दूसरे देशों की भूमि से ही अपने आतंक का व्यापार करता रहा। इस मामले में आई.एस.आई.एस. अब तक के सभी आतंकी संगठनों से बिलकुल अलग है इसलिए अधिक इस्लामी है, अधिक व्यापक है और अधिक खतरनाक है।

स्वयं आई.एस.आई.एस. के कर्ता-धर्ताओं का विश्वास है कि अन्य सभी आतंकी संगठन इस्लामी नहीं हैं। शुद्ध इस्लाम को उनकी नजर में कोई प्रवर्तित नहीं कर रहा, न मुस्लिम कहे जाने वाले राष्ट्र भी शुद्ध इस्लामी हैं अतः इस दायित्व का निर्वहन वे कर रहे हैं अतः उनका दायित्व व कार्यपद्धति पूर्ण शुद्ध इस्लामिक है। इस विचारधारा का वे अनेक माध्यमों से खुल कर प्रचार कर रहे हैं। उनके रिक्रूटिंग एजेंट्स अनेक जगह कार्य कर रहे हैं, आप पर उनकी बातों का कोई प्रभाव न भी पड़े पर जानकार बता रहे हैं कि दुनिया भर से आई.एस.आई.एस. में भरती होने सैंकड़ों लोग सीरिया पहुँच रहे हैं यही बात सर्वाधिक चिन्ताजनक है।

आई.एस.आई.एस. इस्लामिक स्टेट में खिलाफत की स्थापना करना अत्यावश्यक मानता है उसके लिए आपके पास किसी भूमि पर कब्जा होना आवश्यक है, अब जब कि ईराक तथा सीरिया के एक भूभाग पर आई.एस.आई.एस. का कब्जा हो गया है तो इनके प्रमुख बगदादी ने अपने को खलीफा घोषित कर दिया है जिसका नामकरण इस्लामिक स्टेट ऑफ ईराक एंड सीरिया (आई.एस.आई.एस.) किया गया है। यह विश्व का सबसे क्रूर संगठन है। सर कलम किये जाने के वीडियो दिखाकर लोगों के मन में दहशत पैदा करना इसकी योजना का एक हिस्सा है।

आई.एस.आई.एस. का दूसरे मजहब वालों के साथ क्या व्यवहार है यह देखने का विषय है। ईराक का एक शहर है कारकोश जो ईसाई बाहुल्य क्षेत्र है। आई.एस.आई.एस. ने अगस्त २०१४ में इनके बिजली, पानी, खाद्य पदार्थों की आपूर्ति बाधित कर दी। ईसाइयों को कहा गया कि वे या तो इस्लाम ग्रहण करलें या मरने को तैयार हो जायँ। आई.एस.आई.एस. की विचारधारा में एक बात उभर कर आयी है कि जो मुस्लिम हैं पर इस्लाम के नियमों का पालन नहीं कर रहे उनको कोई रियायत नहीं है, उन्हें ईसाइयों जैसी कोई च्वाइस नहीं दी जाती है। ऐसे मुस्लिमों को जिन्हें धर्म त्यागी Apostate कहा गया है, स्वतः ही बिना किसी अन्य सुनवायी के मृत्युदंड का भागी माना गया है जबकि सीरिया के आई.एस.आई.एस. अधिकृत क्षेत्र के ईसाइयों को अधीनता स्वीकार करने तथा जजिया नाम के विशेष कर को अदा करने की सूरत में जीवित रहने दिया है। यह वही जजिया कर है जो अपने को कट्टर इस्लामी कहने वाला औरंगजेब हिन्दुओं पर भारत में लगाता था। यह संकेत हैं कि आई.एस.आई.एस. मात्र एक आतंकवादी संगठन नहीं बल्कि विश्व के एक बड़े भू-भाग पर विशुद्ध इस्लामी शासन स्थापित करना चाहता है दूसरे शब्दों में कहा जाय तो शायद गलत नहीं होगा कि वे ७वीं सदी के इस्लाम को हूबहू अपने अधिकृत क्षेत्र में लागू करना चाहते हैं और उनका विश्वास है, उन्हें पूर्ण आशा है कि वे २०२० से पूर्व अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। लोगों को उनके सपने शेखचिल्ली के ख्वाब लग सकते हैं पर वे पक्के तौर पर आशान्वित हैं कि ऐसा होगा इसीलिए उन्होंने एक नक्शा जारी कर २०२० तक अपने इस इस्लामी साम्राज्य की सीमाएँ भी बता दी हैं। पश्चिम में स्पेन से लेकर पूर्व में चीन तक यह राज्य फैला हुआ है। हाँ भारत भी इसका एक अंग है। आज जब दुनिया में सभी मजहब जो पूर्व शताब्दियों में युद्ध व हिंसा को अनिवार्य धर्म मानते थे, शान्ति की बात करते हैं वहाँ आई.एस.आई.एस. के विचारक युद्ध की स्थिति को अपरिहार्य व इस्लाम समर्थित बताने में कतई संकोच नहीं करते। **क्रूरता उनके निकट शोभा व कर्तव्य है। निहत्थे लोगों का सर कलम करते अथवा उनके हाथ पीछे बाँध उन्हें गोलियों से छलनी करते वीडियो में उनकी क्रूरता तथा मुखमुद्रा बहुत कुछ बयान करती है।** ऐसा भी लगता है कि अपनी रणनीति के निर्माण में अगर उनको हानि भी होती है तो भी वे उन तथाकथित सिद्धान्तों को जो उनकी दृष्टि में इस्लाम की सही व्याख्या हैं, छोड़ने को तैयार नहीं हैं। कुर्दिस्तान की राजधानी एर्बिल की तरफ कूच कर और उसके लगभग निकट तक कब्जा करने में उनको यह विदित ही था कि एर्बिल में अमरीकी नागरिक भारी संख्या में होने से उनका यह कदम अमरीका को

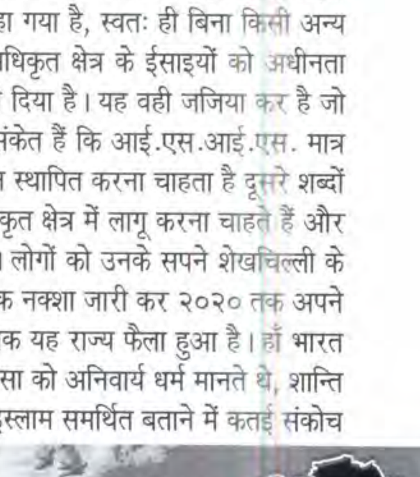

युद्ध में कूदने का बहाना दे देगा, पर वे इससे विरत् नहीं हुए, यही बात दो अमरीकी पत्रकारों जेम्स फौली तथा स्टीवन के सर काट उनके वीडिओ जारी करने में दिखी।

ईराक के सिंजार प्रांत में २ लाख की जनसंख्या में से अधिकांश एक और अल्पसंख्यक मजहब को मानने वाले यजीदी हैं। आई.एस.आई.एस. ने ३ अगस्त १४ को सिंजार पर कब्जा कर लिया। करीब बीस हजार यजीदियों ने सिंजार पर्वत पर शरण ली है उनके साथ अत्यंत क्रूर व्यवहार रोंगटे खड़े कर देने वाला है। कुर्दिश सेना ने दिसंबर १४ में कब्जा मुक्त कराया।

यद्यपि बगदादी एक बार ही सामने आया है पर इनके प्रचार के अनेक साधन हैं। मुहम्मद अल अदनानी आई.एस.आई.एस. का मुख्य प्रवक्ता है। **कहा जाता है कि गत सितम्बर में उसने पश्चिम के मुसलामानों विशेष रूप से कनाडा और फ्रांस के मुस्लिम युवकों को आह्वन किया कि वे काफिरों को पकड़ें और पत्थर से उनका सर चूर-चूर कर दें, उन्हें जहर दे दें, उनके ऊपर गाड़ी चलाकर कुचल दें और उनकी खेतियाँ नष्ट कर दें। ये प्रकार सातवीं आठवीं शताब्दी के दंड-प्रकार बताए जाते हैं।** अतः आई.एस.आई.एस. के जानकारों की मान्यता है कि आई.एस.आई.एस. विशुद्ध इस्लामिक है।

आई.एस.आई.एस. ने अपने कब्जे वाले इलाकों में स्व-मतानुसार बाकायदा प्रशासन स्थापित कर दिया है। एक सरकार की भाँति करों का लगाना, मूल्य नियंत्रण, अदालतों की स्थापना, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा व्यवस्था तथा संचार सुविधाएँ प्रारम्भ कर दी हैं। संतोष की बात यह है कि भारत सहित दुनिया भर के मुख्य इस्लामिक संगठन आई.एस.आई.एस. को गैर इस्लामिक मानते हैं और उनमें से अधिकांश की रुचि और तवज्जो आई.एस.आई.एस. की ओर नहीं है।

आई.एस.आई.एस. पर एक विशेषज्ञ हैकेल के अनुसार आई.एस.आई.एस. प्राचीनतम इस्लाम की पुनर्स्थापना चाहता है। आज के इस्लाम में जिन प्रथाओं की चर्चा नहीं है आई.एस.आई.एस. खुलकर उनको स्थापित करने हेतु प्रयत्नशील है। दास प्रथा, सर काटना जैसी लुप्त क्रूरता आई.एस.आई.एस. द्वारा विजित प्रदेश में बहुतायत से दिखायी दे रहीं हैं। पकड़े गए लोगों में से महिलाओं से दास की भाँति व्यवहार करना, बेचना, उन्हें सेक्स स्लेव के रूप में उपयोग करना पवित्र कार्य समझा जा रहा है। यजीदी समुदाय की ऐसी कुछ महिलाओं ने जो आपबीती सुनायी है उसे सुनकर पत्थर दिल भी पिघल सकता है। इनमें ११ से १२ वर्ष की लड़कियों को भी नहीं छोड़ा गया। एक विशेष बात जो हैरान करने वाली है जिसकी जानकारी एक ऐसी लड़की से मिली जो आई.एस.आई.एस. के चंगुल से भाग निकली और कुछ मुखर होकर बात की। **उसका कहना था कि जब भी उसके साथ रेप किया गया उससे पूर्व और बाद में रेपिस्ट ने प्रार्थना की। यह बात आई.एस.आई.एस. के सिद्धांत और लड़ाकों की मानसिकता की ओर इशारा करती है कि वे ऐसे कृत्यों को भी पवित्र धार्मिक दायित्व मानते हैं।** इसी प्रकार सीरिया के ईसाइयों से जजिया लेने में भी कुरआन के सूरः अल-तौबा का निर्देश नजर आता है जिसमें कहा गया है कि ईसाई और यहूदियों से तब तक लड़ो जब तक वे पूर्ण समर्थन और अपने को अधीन और जजिया कर न देने लगें।

अदनानी जो आई.एस.आई.एस. का मुख्या प्रवक्ता है उसने पश्चिम के नाम अपने एक सन्देश में कहा बताया कि- हम तुम्हारे रोम को फतह करेंगे, तुम्हारे क्रास को तोड़ देंगे तथा तुम्हारी औरतों को गुलाम बनायेंगे। और हम ऐसा नहीं कर पाए तो हमारे बच्चे और उनके बच्चे तुम तक पहुँचेंगे और तुम्हारी संतानों को गुलाम बनाकर बेचेंगे। आई.एस.आई.एस. की प्रचार पत्रिका का नाम 'दबिक' है जो कि ईराक के एक शहर का नाम भी है जिस पर आई.एस.आई.एस. ने कब्जा किया है (दबिक के बारे में एक महत्वपूर्ण तथा दिलचस्प बात यह है कि एक हदीथ के अनुसार इसी स्थान पर दुनिया का अंत होगा। यही कारण है कि आई.एस.आई.एस. ने अपनी पत्रिका का नाम 'दबिक' रखा है तथा जब आज 'लास्ट आवर' की चर्चा ज्यादा सुनाई नहीं देती आई.एस.आई.एस. खुलकर इसकी चर्चा करता है) इसके अक्टूबर अंक में 'कयामत की रात से पहिले दास प्रथा की पुनर्स्थापना' शीर्षक से एक लेख किसी अज्ञात ने

लिखा था। विषय था कि यजीदियों को धर्मच्युत मुसलमान मानकर मृत्युदंड दिया जाय या मूर्तिपूजक मानकर दास मात्र बना लिया जाय। सहस्रों यजीदियों को गुलाम बना लेना परिपुष्टि करता है कि आई.एस.आई.एस.ने उन्हें विधर्मी माना है। आई.एस.आई.एस. किस प्रकार पुरातन इस्लाम की स्थापना की तीव्र इच्छा रखता है यह इसी से स्पष्ट है कि आई.एस.आई.एस. समर्थक तो अंतिम कुछ खलीफाओं को उनके साम्राज्य में पत्थर मार कर दंड देना, हाथ पैर काट देना, दास प्रथा के अभाव के कारण और उनके कुरैशी न होने के कारण उन्हें खलीफा मानते ही नहीं हैं। इसीलिये बगदादी ने २६ जून को जो भाषण दिया था उसमें सच्चे सच्चे रूप में १००० वर्ष से समाप्त हुयी खिलाफत साम्राज्य की आवश्यकता बतायी थी। यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस्लाम धर्म के साथ साथ खिलाफत की भी उतनी ही आवश्यकता आई.एस.आई.एस. की नजरों में है। बगदादी और आई.एस.आई.एस. की दृष्टि में, चाहे एक व्यक्ति सच्चे मुसलमान का जीवन जिए पर खलीफा के समक्ष शपथ के विना उसने सच्ची इस्लामिक जिन्दगी जी, ऐसा नहीं कहा जा सकता। आई.एस. आई.एस. द्वारा अब यह प्रचारित किया जा रहा है कि हर सच्चे मुसलमान को खिलाफत साम्राज्य में प्रयाण कर जाना चाहिए। आई.एस.आई.एस. के उत्थान तथा कम समय में ब्रिटेन से भी ज्यादा इलाके को जीत लेने में ईरान, ईराक, की राजनीतिक प्रतिबद्धताओं का योगदान रहा। शिया व सुन्नियों के बीच के झगड़े तथा इस आधार पर अमरीका से जोड़-तोड़ आदि कई ऐसे मुद्दे हैं जिनका विश्लेषण इस आलेख में संभव नहीं है। शिया मुस्लिमों को आई.एस.आई.एस. मुस्लिम नहीं मानता अर्थात् वे धर्मच्युत हैं दूसरे शब्दों में आई.एस.आई.एस. में उनका भविष्य मृत्यु ही है। उनके दृष्टिकोण से वे मुस्लिम राष्ट्राध्यक्ष भी धर्मच्युत् हैं जिन्होंने दैवीय कानून 'शारिया' के स्थान पर मनुष्यकृत कानून चलाए हैं- उनका भी एक ही दंड है मृत्यु दंड। आई.एस.आई.एस. के समर्थकों का कहना है कि अब जब खिलाफत की स्थापना हो चुकी है तब साम्राज्य विस्तार पवित्र दायित्व है जिसमें गैर मुस्लिम देशों पर विजय शामिल है। उनका मानना है कि अगर खलीफा साल में एक बार 'जिहाद' नहीं करेगा तो वह पाप होगा। आई.एस.आई.एस. द्वारा न केवल मर्दों वरन् औरतों से भी शामिल होने की अपील की जा रही है स्पष्ट है कि आई.एस.आई.एस. पूर्ण सोसाइटी बनाना चाहता है।

आई.एस.आई.एस. की भारत के बारे में भी योजना है। जैसा कि जिक्र किया जा चुका है आई.एस.आई.एस. द्वारा खिलाफत साम्राज्य का जो नक्शा दिया गया है उसमें भारत भी शामिल है। आई.एस.आई.एस. की इच्छा है कि भारतीय महाद्वीप में कार्यरत सभी आतंकी संगठनों को अपने नेतृत्व में लेकर भारत पर कब्जा करे। यह नहीं भूलना चाहिए कि इस समय ताकत और धन में आई.एस.आई.एस. का व अन्य आतंकी संगठनों का कोई मुकाबला नही है। बताया जाता है कि इनके पास ५०००० प्रशिक्षित लड़ाके तथा २ मिलियन पौंड धन है।

अब जबकि अमेरिका आई.एस.आई.एस. के खिलाफ अपने हवाई हमलों के साथ कूद चुका है (इन पंक्तियों के लिखने के समय टर्की को बेस बना अमेरिका ने हवाई हमले शुरू कर दिए हैं) ईरान, ईराक की सेनाएँ, शिया व कुर्द लड़ाके सभी आई. एस.आई.एस. के विरुद्ध कार्यवाही में रत हैं, आई.एस.आई.एस. के साम्राज्य विस्तार का भविष्य संदिग्ध तो कहा जा सकता है परन्तु आई.एस.आई.एस. पूर्ण आशान्वित है कि २०२० तक प्रस्तावित नक्शे का भूभाग उसके अधीन होगा और यह भी कि **आई.एस.आई.एस. की यही आइडियोलाजी कायम रहती है तो वर्तमान मुसलमानों को उनसे सर्वाधिक खतरा है क्योंकि विशुद्ध इस्लाम का पालन न करने से वे उनकी दृष्टि में 'एपोस्टेट' हैं जिनके वास्ते एक ही दंड है वह है- मृत्युदंड।**

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

❑❑❑

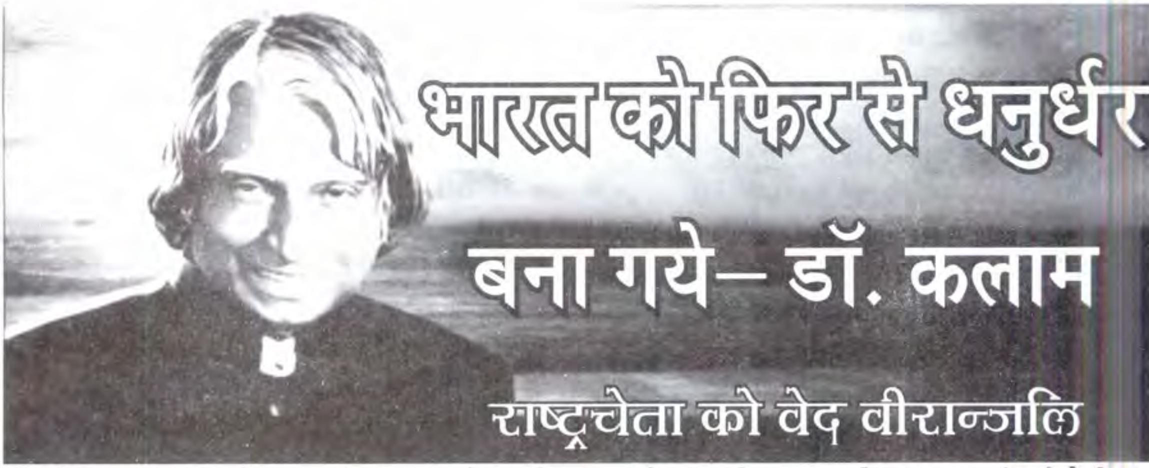

भारत को फिर से धनुर्धर बना गये– डॉ. कलाम

राष्ट्रचेता को वेद वीराञ्जलि

प्रतिवर्ष विजय दशहरा पर्व पर रामलीला का प्रदर्शन करके अन्याय पर न्याय की जीत का शंखनाद किया जाता है। इस अवसर पर जो मेले लगते हैं उनमें तीर कमान व तलवार खिलौने के रूप में विक्रय किए जाते हैं, जिनसे बच्चों को इनके नाम एवं काम का पता रहता है। धनुर्धर होने का आशय है- सतर्क व ससाधन होकर अपने अधिकार की रक्षा करना और शासक के लिए इसका संदेश होता है- अपनी शासन व्यवस्था को जन कल्याणकारी बनाने के साथ-साथ राष्ट्र- रक्षा के लिए सन्नद्ध रहना। वेदमाता इसी प्रकार की सीख हमको प्रदान करती है:-

धनुर्हस्तादाददानो मृतस्य सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन।
समागृभाय वसु भूरि पुष्टमर्वाङ् त्वमेह्युप जीवलोकम्।।

- अथर्व १८.२.६०

अर्थात् मृतवत् कापुरुषों के हाथ से शासन सत्ता के प्रतीक धनुष को राज्य के क्षत्रिय तेज व बल से छीनकर पुरुषार्थी जीवन्त लोगों के हाथों में सौंप देते हैं जिससे वे सम्यक् रूप से पुष्टिकारक बहुत सारे ऐश्वर्य व यश के अधिकारी बनते हैं। महाभारत कालीन महान् योद्धा अर्जुन ने लड़ने वाले सगे सम्बन्धियों को देखकर अपना गाण्डीव स्वयं ही छोड़ दिया। योगीराज श्रीकृष्ण धन्य ही उसके सारथी थे, जो उन्होंने अपने गीतोपदेश द्वारा अर्जुन को युद्ध के लिए उद्यत कर दिया। ग्रामीण भाषा में धनुष को कमान कहते हैं। जो कमाण्ड या नियंत्रण का बोध कराती है। कमान की प्रत्यन्चा डोरी यदि तनी रहती है तभी उससे तीर भी चलता है और एकतारा की टंकार का संगीत भी निकलता है। तात्पर्य यह है कि शासन की सन्नद्धता में ही राष्ट्र की सुरक्षा और विकास की समृद्धता संभव है। देखिये-

धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम।
धनुःशत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम।।

ऋग्वेद ६.७५.२

अर्थात् धनुष के द्वारा शत्रुओं द्वारा हरण की गई गौओं तथा भूमि को फिर जीतने वाले बनें। धनुष से हम संग्रामों को जीतें। इस धनुष से ही बड़े तीक्ष्ण स्वभाव वाले मदान्ध शत्रु सैन्यों को जीतें। यह हमारा धनुष ही शत्रुओं की विजय की अभिलाषा को चूर्ण करता है। धनुष ही सभी दिशा दिशान्तर में हमें दिग्विजयी बनाता है। रामायण तथा महाभारत काल के काव्यों का जब हम अवलोकन करते हैं तो महर्षि विश्वामित्र एवं महर्षि परशुराम प्रभृत युद्ध कौशल एवं शस्त्रास्त्र विद्या में निपुण देखे जाते हैं और वे अपने शिष्यों को इसके लिए प्रशिक्षित भी करते हैं।

डॉ. होमी जहांगीर भाभा तथा डॉ. विक्रम साराभाई यद्यपि अल्पायु में ही अनहोनी मृत्यु को प्राप्त हो गए, किन्तु उन्होंने जो योगदान भारत की सुरक्षा में प्रदान किया, वह अमूल्य ही

नहीं, प्रत्युत् डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की प्रेरणा का स्रोत भी बना। हम हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा लगाकर चीनी नेताओं का स्वागत करते रहे, किन्तु उन्होंने इसकी उपेक्षा कर नवोदित स्वतंत्र भारत के ऊपर सन् १९६२ में भयंकर आक्रमण कर दिया। उन दिनों दूरदर्शन इतना प्रचलित नहीं था किन्तु आकाशवाणी पर सेवानिवृत्त

लोकप्रिय प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने रुग्णावस्था में सदाकत आश्रम बिहार से जो वेदनापूर्ण गर्जना की थी, और भारत के लोकप्रिय प्रथम प्रधानमंत्री ने जो हृदयाघातकारी गर्जन की थी वह लेखक के कानों में आज भी गूँज रही है। ये दोनों ही महापुरुष कुछ ही काल बाद हमसे विदा हो गए, किन्तु भारतीयों के नेत्रों में पश्चाताप, प्रतिज्ञा का महान् संकल्प संजो गए, जिससे भारत सतर्क सावधान होकर खड़ा हुआ, और सन् १९६५ में अपने दूसरे नापाक आक्रमणकारी पड़ौसी को धूल चटा दी। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं योगीराज श्रीकृष्ण के आदर्श का अनुगमन करते हुए गिड़गिड़ाते शत्रु को, गरल का घूँट पीकर भी ताशकन्द के समझौते में जीती हुई भूमि लौटा दी। इस षड्यंत्र में अपने लाड़ले पुत्र भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री का असामयिक बलिदान भी भारत माता को झेलना पड़ा।

इन सभी सम-विषम परिस्थितियों में अवतरण होता है वीर सेनानियों का धीर राष्ट्र नेताओं और गंभीर वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम एवं उनके सहकर्मियों का, जो भारत राष्ट्र के हाथ में सबल संहारक धनुष फिर पकड़ा देते हैं।

उन्हें अपने प्राचीन योद्धाओं एवं अस्त्र-शस्त्र के सन्देश से जो प्रेरणा मिलती है, उसी के आधार पर प्रारम्भ होते हैं, उपग्रह प्रेषण, अन्तरिक्ष यान, प्रक्षेपणास्त्र (मिसाइल) त्रिशूल, लक्ष्य, पृथ्वी, अग्नि, नाग और आकाश आदि और पोखरण में परमाणु परीक्षण के विस्फोट। क्या आपको पता है कि अपने सुख-दुःख, संकट के समय हिन्दी न जानने पर भी राष्ट्रभाषा के गीत की पंक्तियाँ गुनगुनाकर डॉ. कलाम स्वयं को सुसंयत बना लिया करते थेः-

होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन।
हो हो हो पूरा है विश्वास मन में है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन।

डॉ. कलाम **'मातृमान पितृमान आचार्यवानू पुरुषो वेद'** की शिक्षा सम्पूर्ण भारत में घूम-घूम देते हैं। राष्ट्रपति बनने से पहले ही डॉ. कलाम भारतरत्न हो गए थे। पदग्रहण करते ही डॉ. कलाम ने गरिमामय घोषणा की थी भारत के युवा नागरिक होने के नाते, प्रौद्योगिकी, ज्ञान और देश प्रेम से युक्त मैं महसूस करता हूँ कि छोटा लक्ष्य अपराध है। प्रक्षेपणास्त्र पुरुष, दार्शनिक तथा राष्ट्रपति होते हुए भी वे सदैव एक शिक्षक की भूमिका का निर्वहन करते रहे। यहाँ पर उनके सम्पूर्ण जीवन वृतान्त का वर्णन सम्भव नहीं। इसके लिए तो आपको उनके आत्मकथ्य 'अग्नि की उड़ान' व 'तेजस्वी मन' आदि ग्रन्थों का वाचन करना पड़ेगा। भारत के सुदूर दक्षिण के रामेश्वरम् धनुषकोटि के सिन्धु जलकणों से उपजा यह पुनीत पंकज सुदूर उत्तर के मेघालय स्थित श्वेत शिलांग के हजारों फीट ऊँचे रजकणों का संस्पर्श करते हुए सूर्य के साथ ही अस्ताचल में विलीन हो गया। प्रौद्योगिक शिक्षण संस्थान के महामंदिर में माता के मस्तक को ऊँचा करने वाले सपूत का यह महाबलिदान है। शिलांग की शिलायें भी अश्रु विगलित करते हुए मानो गुंजन कर रहीं हों-

जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

जहाँ योगेश्वर कृष्ण अनुकरणकारी राष्ट्रनायक, जहाँ अर्जुन जैसे धनुर्धारी अनुयायी योद्धा हों, वहाँ श्री, विजय, विभूति एवं अचलनीति सदा विराजते हैं। एक हाथ में धनुष (प्रक्षेपणास्त्र) दूसरे में रुद्रवीणाधारी, संस्कृतज्ञ कलाम के मुख से प्रस्फुटित एक श्लोकीय गीत भी यही तो घोषणा करते हैं-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। - गीता १८.७८

देवनारायण भारद्वाज
वरेण्यम अवन्तिका प्रथम
रामघाट मार्ग,अलीगढ़,उत्तरप्रदेश

□□□

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

दान, दया और परोपकार,
का यह सुन्दर परिणाम।
सबसे मिलता स्नेह प्रेम,
और जग में होता नाम।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

गतांक से आगे ....

ऋषि दयानन्द के साहित्य का भाषागत अध्ययन

डॉ. मंजुलता विद्यार्थी

ग्रामीण एवं लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग- ऋषि दयानन्द की भाषा में ग्रामीण व लोक प्रचलित शब्दों का व्यवहार भी मिलता है। जैसे- मच्छी (मछली), चौतरी (चौपाल) हाड-गोड इत्यादि। कुछ विशेषणों का ग्राम्य प्रयोग हुआ है, यथा-सूधा (सीधा), क्रोड (करोड़) कै प्रकार (कितनी प्रकार) इत्यादि। मेरठ जिले की खड़ी बोली के उनने, इससे, जिससे और ब्रजभाषा के भया, भई, होय जैसे लोकप्रचलित शब्दों का भी उन्होंने प्रयोग किया है। ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में व्याख्यानों में अनेक दृष्टान्त प्रस्तुत किए हैं। इन दृष्टान्त कथाओं में तथा खण्डन-प्रसंगों में भाषा को सरल व बोधगम्य बनाने के लिए उन्होंने लोकप्रचलित शब्दों का अधिक प्रयोग किया है। जैसे तोड़ताड़कर, लड़ाई-बखेड़ा, भीड़भड़क्का, खण्डबण्ड, ऊंटपटांग, हल्लागुल्ला, गपोड़ा, भोजनभट्ट, चटकमटक, अण्डबण्ड, हुड़दंगा इत्यादि। कथाओं में तो पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग भी द्रष्टव्य है- यथा-हाय रे दैय्या, एलो, धर्म से कहता हूँ, चल बे, अबे, मुख सम्हाल के बोल, अहो! ऐसी बात है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे ग्रन्थों के प्रणयन में ऋषि दयानन्द की भाषा विषय के अनुरूप गहन, गम्भीर तथा अर्थव्यंजक तो अशिक्षित और अविद्याग्रस्त लोगों को शिक्षित बनाने के उद्देश्य से लोकप्रचलित व ग्रामीण शब्दों के प्रयोग से भी युक्त है।

उर्दू शब्दों का प्रयोग- ऋषि दयानन्द ने उर्दू शब्दों का प्रयोग भी किया अवश्य है पर प्रसंग के अनुसार किया है। मजहब, फरिश्ता आदि उर्दू शब्दों का सर्वाधिक प्रयोग कुरान खण्डन के प्रसंग में हुआ है। वहाँ प्रसंग सापेक्ष इन शब्दों का प्रयोग किया गया है। उर्दू-हिन्दी की दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने पसन्द के स्थान पर प्रसन्न शब्द का प्रयोग किया है- 'और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं, उनको मैं प्रसन्न (पसन्द) नहीं करता।' लेकिन उनकी भाषा में उर्दू-हिन्दी दोनों भाषाओं में बोलचाल के साधारण शब्दों का प्रयोग निश्चय ही मिलता है 'मार के मारे झट बतला दिया। तब सब कोष लूट, मार-कूटकर पोप और उनके चेलों को गुलाम, बिगारी बना पिसना पिसवाया, घास खुदवाया, मल-मूत्रादि उठवाया और चना खाने को दिया।'

अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी शब्द- ऋषि दयानन्द की भाषा में प्रचलित विदेशी शब्दों का प्रयोग भी मिल जाता है। यथा-क़यामत, दोज़ख, रसूल, बहिश्त, गवाही, शरीक, कत्ल, कुफ्र, दीन, रूह, वास्ते जैसे अरबी-फारसी के शब्द तथा कलेक्टर, गवर्नर, फिलासफी, फिलासफर, पोलिटिक्स इत्यादि अंग्रेजी के शब्द भी मिल जाते हैं।

ऋषि दयानन्द की भाषा में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग- ऋषि दयानन्द की भाषा में मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। इससे उनकी भाषा में ओजस्विता तथा प्रभावोत्पादकता के साथ अभिव्यक्ति का सामर्थ्य भी खूब बढ़ गया है। 'आँख का अन्धा गांठ का पूरा' तो उनका प्रिय मुहावरा है, यथास्थान उसका प्रयोग सर्वत्र हुआ है। 'दाल न गलना, दाँत तोड़ डालना, धक्के खाना, धुर्रे उड़ा देना, दूर के ढोल अच्छे, अन्धों में काना राजा, सिर-धुनना, सब अन्न बारह पसेरी, पल्ले न पड़ना, लड़कों का खिलौना, मन के गुलगुले खाना, सन के छूछे गोले चलाना, अपना अपना छप्पर अपने अपने हाथ से छाना इत्यादि मुहावरों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों के अतिरिक्त कहावतों ने भी उनके गद्य को शक्ति दी है। उलटा चोर कोतवाल को दण्डे, हाथी के दाँत खाने के भिन्न और दिखाने के भिन्न होते हैं, चले तो चौबेजी छब्बेजी बनने को, गाँठ के दो खोकर दुबेजी बन गए, कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा, जैसे प्रेतनाथ वैसे भूतनाथ, जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ जैसी कहावतों का प्रयोग खूब हुआ है।

शब्दशक्ति व कुछ कहावतों के प्रयोग दृष्टव्य हैं-

अटकलपच्चू कूप के समान चतुराई दिखलाई है। हल्दी की गाँठ के बल पर, लिखकर बैठे रहे। यह व्याघ्र की खाल उघड़कर सब कलई खुल जाएगी। भूषण को दूषण करके माना करते हैं तो माना करें।

इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत के सुभाषितों एवं मुहावरों को भी हिन्दी में अभिव्यक्ति दी है यथा-मूर्खाणां बलं मौनम्, भोगे रोगभयम्, समानव्यसनेषु मैत्री, विनाशकाले विपरीतबुद्धिः, स्वार्थी दोषं न पश्यति, यादृशो वाहनः खरः अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः, नष्टे मूले नैव पत्रं न पुष्पम् इत्यादि। इसी प्रकार उन्होंने संस्कृत के 'धावतः स्खलनं न दोषाय भवति' का प्रयोग 'दौड़ेगा सो गिरेगा' के रूप में किया है। इसके अलावा जनता के निकट सम्पर्क में होने के कारण इनकी भाषा में अंट-संट मारना, सैल सपट्टा, गडक करना, गपड़चौथ, भेंट भट्टका, टिक्की जमाई आदि ठेठ ग्रामीण मुहावरों का प्रयोग भी मिलता है।

नए शब्दों का निर्माण तथा प्रचलन- ऋषि दयानन्द ने प्राचीन किन्तु जो हिन्दी भाषा में नहीं थे, ऐसे शब्दों का प्रचलन किया। जैसे आर्य, आर्यावर्त, तथा नमस्ते। 'नमस्ते' शब्द के प्रचार से पूर्व भारत में राष्ट्रीय अभिवादन के लिए कोई शब्द ही नहीं था।

सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द ने 'नमस्ते' का 'शब्दरत्न' भारतीय समाज को दिया। आजकल विदेशों में नमस्ते शब्द भारतीय अभिवादन के रूप में स्वीकृत हो चुका है। इसके अतिरिक्त नेपाल में नमस्ते को अपने राष्ट्रीय अभिवादन के रूप में राजकीय स्तर पर स्वीकार कर लिया है।

इसी प्रकार ऋषि दयानन्द ने प्राचीन शब्दों का नवीन अर्थों में प्रयोग किया है। जैसे पाखण्डी, उदरम्भर, पुरोहितों के लिए उन्होंने 'पोप' शब्द को प्रचलित किया है। अन्यायी मूर्खशासक के लिए 'गवर्गण्ड' शब्द दिया। अनुवाद के लिए 'उलथा' शब्द का प्रयोग भी किया है। कहीं-कहीं उन्होंने हिन्दी शब्दों को कुछ परिवर्तित करके तत्सम रूप भी देने का प्रयास किया है। वे पुजारी को ईश्वर की सच्ची पूजा का अरि (शत्रु) कहते थे, अतः उन्होंने पुजारी के स्थान पर पूजारि शब्द का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी और संस्कृत के शब्दों से मिले जुले शब्द भी बनाये हैं जैसे गड़बड़ाध्याय, गपोड़ाध्याय, मतलबसिन्धु, पेटार्थी, इत्यादि। ऋषि दयानन्द ने विश्व के सभी प्रचलित धर्म व सम्प्रदायों को चार मतों में अन्तर्निहित करते हुए उन्हें अनुप्रासिक शब्दावली में नाम दिया है यथा पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी। उन्होंने कुछ ऐतिहासिक शब्द भी दिए हैं। जैसे पाताल (अमेरिका) त्रिविष्टप (तिब्बत)। क्रमशः ....

- श्रुति-सौरभ
इंजीनियर्स कॉलोनी, धनवन्तरी नगर
उमरी, अकोला - ४४४००५

❑❑❑

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
☞ जनवरी १६ से दिसम्बर १६ तक सत्यार्थ सौरभ के सभी १२ अंकों में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश पहेलियों को हल करें।
☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
☞ ऊपरलिखित उपबन्धों के अधीन पूरे १२ महीने शुद्ध हल भेजने वालों में से एक विजेता का चयन लॉटरी के द्वारा होगा।
☞ विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

प्रेरणा

दृढ़ निश्चय और समर्पण की पराकाष्ठा

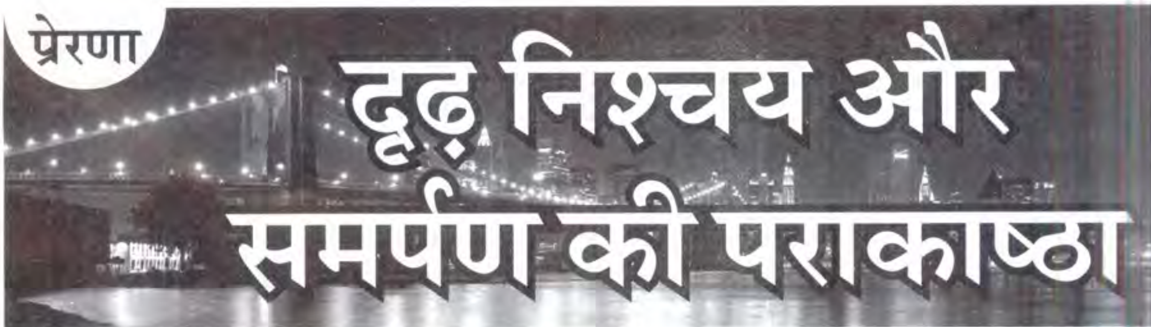

न्यूयार्क तथा ब्रुकलिन के बीच की 'ईस्ट रिवर' नदी यातायात के दृष्टिकोण से अमेरिकावासियों के समक्ष एक चुनौती बनी रही। ठण्ड के दिनों में जब बर्फ जम जाती थी तो इसको पार करके न्यूयार्क जाना बहुत बड़ी समस्या थी। नदी की स्थिति को देखते हुए उस पर पुल बनाना कोई सहज कार्य नहीं था परन्तु 'राबलिंग' नामक एक इंजीनियर ने इसका बीड़ा उठाया और नदी पर एक लटके हुए ब्रिज की डिजाइन तैयार की। यह वह समय था जब बिजली के बल्ब तथा टेलीफोन का आविष्कार नहीं हुआ था। इस पर एक मील लम्बे (कुल मिलाकर) पुल की यह विशेषता है कि यह हाथों से बनाया गया अद्‌भुत निर्माण है। इसे बनाने में कई कामगारों की जिन्दगी खत्म हो गयी। इस पुल को बनाने की बात तो सन् १८०० से चल रही थी पर बनेगा कैसे यह किसी को समझ नहीं आ रहा था। परन्तु १८६७ में जान राब्लिंग ने तीन महीने में ही इस पुल की सम्पूर्ण योजना तथा डिजायन प्रस्तुत कर दी। १८६८ में कार्य प्रारम्भ हो गया।

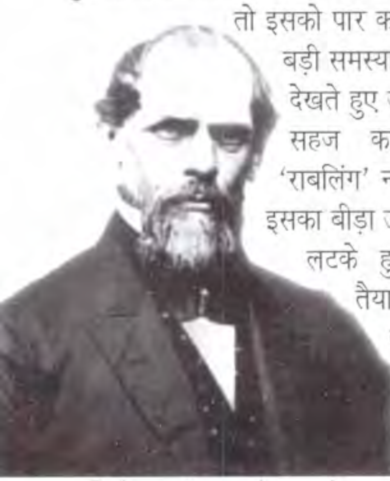

जब यह कार्य चल ही रहा था और लग रहा था कि कार्य संभव हो पायेगा तभी टिटनेस के कारण मुख्य डिजायनर जॉन राबलिंग की मृत्यु हो गई। उसके तुरन्त बाद जॉन के बेटे वाशिंगटन रोबलिंग ने इस कार्य को सँभाला परन्तु हालात की मार देखिये कि कुछ समय में ही वाशिंगटन रोबलिंग को लकवा मार गया। और उसने बिस्तर पकड़ लिया। **ऐसे समय में वाशिंगटन की पत्नी एमली ने जिस दृढ़ता, समर्पण, त्याग और हालात से जूझने में तत्परता का प्रदर्शन किया वह अतुलनीय था।** उसको पढ़ना एक रोमांचक अनुभव से गुजरना और प्रेरणा प्राप्त करना है। एमली पेशे से इंजीनियर नही थी परन्तु उसने अपने आप को परिस्थितियों में ढाला। वाशिंगटन न बोल सकता था, न लिखकर के निर्देश दे सकता था। बड़ी मुश्किल उसने अंगुलियों से इशारे करके एमली को समझाने की और एमली ने समझने की कला का विकास कर लिया। एमिली ही अब वाशिंगटन की आँख और कान थी। अब जो भी निर्देश ब्रुकलिन ब्रिज के निर्माण में लगे इंजीनियरों को देने होते थे और उनकी जो समस्याएँ थीं, उनको जानकर के वाशिंगटन से समाधान प्राप्त करना होता था, वह सब एमली ने किया। ब्रुकलिन ब्रिज का निर्माण कोई घर बनाने जैसा नहीं था एक विशाल नदी पर एक मील से भी लम्बा सस्पेंशन ब्रिज बनाना एक अजूबे जैसा कार्य था। अगले चौदह वर्ष एमली ने इसमें खपा दिए। उसने यह भी साबित किया कि किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए उस विधा में आपके पास डिग्री हो यह सर्वदा आवश्यक नहीं होता। अगर आप दृढ़ निश्चयी हैं तो आपको सीखने में भी समय नहीं लगता और एमली ने इस बात को साबित किया। उसने अपनी जिन्दगी का एकमात्र ध्येय बनाया और वह था ब्रुकलिन ब्रिज का निर्माण।

मेरेलिन डी गोल्ड ने ऐमली को 'सायलेन्ट बिल्डर' की उपाधि बिल्कुल सही दी। वस्तुतः इस पुल को बनाने में उन दिनों लकड़ी के बहुत बड़े बॉक्स बनाकर उसमें कम्प्रेस्ड हवा भरकर ताकि उनके अंदर पानी न घुस सके अभियन्ताओं और मजदूरों को कार्य करना होता था। यह इतना कठिन कार्य था इसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था अधिकांश मजदूर एक से दो घण्टे से अधिक कार्य नहीं कर पाते थे और पानी के अंदर पुल की नींव खोदने के समय की विपरीत परिस्थितियों ने कई लोगों को चपेट में लिया। इसी में वाशिंगटन ने भी लकवे की बीमारी प्राप्त की। एमली ने पुल अभियांत्रिकी, उच्चतम गणित, लोहे इत्यादि की मजबूती, स्ट्रेस विश्लेषण के बारे में अपने पति से

कुशलतापूर्वक व तीव्र गति से सीखा और वह इन विस्तृत निर्देशों को सम्बन्धित व्यक्तियों तक पहुँचाकर उन्हें समझा भी देती थी। वाशिंगटन का स्वास्थ्य धीरे-धीरे गिर रहा था। एमली हर चीज के नोट लेती जाती थी और उन्हें वापस पति को सुनाकर कोई सुधार होता तो सुधार कर लेती थी। कई बार तो उसमें कई बार सुधार करने पड़ते थे और इस प्रकार से एमली की पुल निर्माण के क्षेत्र में जानकारी असाधारण रूप से बढ़ गई और वे अभियन्ताओं, मजदूरों के पर्यवेक्षकों को अपनी बात आसानी से समझा देती थी। इसी बीच कुछ लोगों ने मिलकर यह अभियान चलाया क्योंकि वाशिंगटन लकवाग्रस्त है इसलिए उसे मुख्य अभियन्ता के पद से हटा देना चाहिए तो एमली ने वाशिंगटन का पक्ष नेताओं के सामने इस प्रकार रखा कि उन्होंने वाशिंगटन को ही मुख्य अभियंता के रूप में स्वीकार किया और आखिरकार विश्व के सुन्दरतम और मजबूत पुलों में से एक पुल बनकर तैयार हुआ। २४ मई १८८३ को पुल के औपचारिक उद्घाटन के पश्चात् एमली वह पहली व्यक्ति थी जिसने उस पुल को गाड़ी से पार किया उसको सम्मानित भी किया गया। प्रारम्भ में पुल मजबूत है या नहीं यह सोचकर लोगों ने पुल से गुजरना पसन्द नहीं किया बल्कि ३० मई को अफवाह उड़ गयी कि पुल टूटने वाला है इससे जो भगदड़ मची उसमें २७ लोग मारे गए। जब १७ मई १८८४ को तब के सर्वाधिक लोकप्रिय सर्कस का पूरा कारवां इस पर से गुजारा गया जिसमें २१ हाथी थे तब जाकर लोगों को इसकी मजबूती का एहसास हुआ। न्यूयार्क व ब्रुकलिन शहर के बीच का यह खूबसूरत पुल आज भी एमली की सेवानिष्ठा और समर्पण की कहानी कहता है।

प्रस्तुति- नारायण लाल मित्तल
कोषाध्यक्ष, नवलखा महल
गुलाबबाग, उदयपुर- ३१३००१

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश पहेली-२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१		१ सा	■	२	ग्र	२	■	३	३ द्धि	■
४		४	न्द्रि	४	■	■	५	न	५	५ य
६ आ	६	■	■	७ वि		■	८	८ द्र		८ व

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. पाँच यमों में से एक है?
२. विषयों में विचरती हुई इन्द्रियों का क्या करें?
३. जीवात्मा जब इन्द्रियों को अपने वश करता है तो क्या प्राप्त कर लेता है?
४. वेद, त्याग, यज्ञ, नियम और तप आदि अच्छे काम करने पर भी किसे सिद्धि प्राप्त नहीं होती?
५. वेद के पढ़ने-पढ़ाने, सन्ध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञों को करने में क्या नहीं होता?
६. जो सदा नम्र, सुशील, विद्वान् और वृद्धों की सेवा करता है उसका क्या बढ़ता है?
७. ब्राह्मण (विद्वान्) प्रतिष्ठा से किसके तुल्य डरे?
८. जो वेद न पढ़के अन्यत्र श्रम किया करता है वह अपने पुत्र-पौत्र सहित किसको प्राप्त कर लेता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १९ का सही उत्तर

१. अभाव	२. दुर्गन्ध	३. सोलह	४. यज्ञोपवीत
५. पाप		६. रोगों	७. गृहस्थवायु

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ नवम्बर २०१५

No More Aurangzab Road, It is APJ Abdul Kalam Road Now!

औरंगजेब रोड का नाम बदलकर डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जैसे हरदिल अजीज व्यक्तित्व और भारत रत्न, पूर्व राष्ट्रपति के नाम पर रखना स्वागत योग्य कदम है। यहाँ यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि सड़कों के नाम बदलने से क्या फर्क पड़ता है तो हमारा निवेदन है कि मनीषियों के नाम पर जब सड़कों, इमारतों भव्य भवनों का नामकरण होता है तो जो भी वहाँ आता है अथवा वहाँ से निकलता है उस नाम के साथ उस महामना का व्यक्तित्व व कृतित्व भी उसके जेहन में बस जाता है। अगर वह पूर्व परिचित नहीं है तो उस व्यक्तित्व के बारे में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रखता है। इस बात को मजहबी अथवा राजनीतिक रंग देने की कतई आवश्यकता नहीं है। वस्तुतः यह एक सड़क ही क्यों, संपूर्ण भारत वर्ष की सड़कों व इमारतों से हमारी गुलामी की स्मृतियों को ताजा करने वाले सभी ऐसे लोगों के नाम बदलकर, भारतीय मनीषा के चुने हुए नाम रखने चाहिए, ऐसा हमारा मत है। विचारणीय है कि मुगल काल के अन्य शासकों के बारे में फिर भी कुछ लोगों के विभिन्न मत हैं, परन्तु जहाँ तक औरंगजेब का सवाल है, जितना पढ़ा लिखा है, उससे यही ज्ञात होता है कि उसकी प्रतिष्ठा एक असहिष्णु और क्रूर शासक के रूप में थी। इसलिए जब सीमा पार पाकिस्तान के एक पत्रकार का एक लेख जिसका शीर्षक 'Why I danced When I found out Delhi's Aurangzeb Road was being renamed after A.P.J. Abdul Kalam', पढ़ा तो साधुवाद देने योग्य ही लगा। एक अन्य इतिहासकार ने औरंगजेब के बारे में लिखा है- 'When he died in 1707 A.D. at the ripe old age of 88, he was a much hated and despised man.'

परन्तु अभी औरंगजेब रोड का नाम बदलने की निन्दा तथा इसे निरस्त करने की माँग करते हुए 'आप' के एक विधायक ने औरंगजेब को एक 'शरीफ बादशाह' बताया तो मन में स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी कि अगर औरंगजेब जैसा क्रूर और धार्मिक रूप से असहिष्णु शासक 'शरीफ' था तो 'शराफत' की नई परिभाषा ढूढ़नी पड़ेगी। बीकानेर पुरातत्व संग्रहालय के संग्रह में औरंगजेब के फरमानों के दस्तावेज सुरक्षित हैं जो कि अब अपने अर्थ सहित अन्तर्जाल पर भी उपलब्ध हैं। परन्तु उसकी चर्चा करने से पूर्व यह कहना चाहेंगे कि यह सोचकर के भी वितृष्णा होती है कि जिस व्यक्ति ने अपने पिता को केवल इस कारण से कि वह उसकी नीतियों से सहमत नहीं था बुढ़ापे में अकेले एक किले में कैद रखा और दूसरी ओर अपने विद्वान् भाई दारा शिकोह की इस कारण हत्या कर दी कि वह अन्य मत के लोगों के प्रति सहानुभूति रखता था और उनसे मिलता जुलता था तथा अन्य मतों के प्रति उसकी सद्इच्छा भी थी, तो ऐसा व्यक्ति किस आधार पर 'शरीफ' कहा जायेगा? यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है। हमारा तो यहाँ तक सोचना है कि किसी व्यक्ति ने अपने सारे जीवन में कितने भी सद्कर्म किए हों परन्तु उसने अपने पिता व भाई के साथ अगर औरंगजेब जैसा रवैया अपनाया है तो अपराधी ही नहीं पापी भी है। उसका जीवन दर्शन कभी भी आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा नहीं दे सकता।

औरंगजेब ने अपना सारा जीवन सादगी में बिताया, इस्लाम के नियमों का पालन करते हुए अपने को शराब इत्यादि से दूर रखा, टोपी सिलकर और कुरान की नकल कर पैसे कमाए, अपने मरने के पश्चात् कोई भव्य भवन अपनी कब्र के ऊपर बनाने का निषेध किया, इस सब वैयक्तिक उपलब्धि के बावजूद प्रश्न यह है कि एक शासक के रूप में अपनी समस्त प्रजा के साथ उसका एक जैसा व्यवहार था? जिसका स्पष्ट उत्तर नकारात्मक मिलता है।

इतिहासकारों का मत है कि औरंगजेब ने सैंकड़ों नहीं सहस्रों

मंदिर तुड़वाये जिनमें से एक मथुरा स्थित केशवराय जी के मंदिर की विशेष चर्चा होती है। इस मंदिर को तुड़वाकर के औरंगजेब ने उस पर एक मस्जिद बनवाई जो आज भी वहाँ स्थित है। उस मस्जिद के बिल्कुल बगल में थोड़ी सी जमीन पर जब खुदाई करायी गई तो नीचे मंदिर के अस्तित्व के

प्रबल प्रमाण मिले। इतिहासकारों के अनुसार ६ अप्रैल १६६६ को औरंगजेब ने सभी प्रान्तों के गर्वनरों को यह आदेश दिया कि वे काफिरों के सभी विद्यालयों और मंदिरों को तुरन्त नष्ट कर दें।

औरंगजेब के भाई दारा शिकोह ने मथुरा के केशवराय मंदिर को पत्थर की एक रेलिंग भेंट की थी जिसके बारे में औरंगजेब की राय विरुद्ध थी और उसने उस रेलिंग को तुड़वाया भी। इतिहासकारों के मुताबिक औरंगजेब के स्वयं के दरबार के रिकार्ड के अनुसार औरंगजेब का स्पष्ट मत था कि **'मुस्लिम मत के अनुसार मंदिरों की तरफ देखना भी अनुचित है।'** मंदिरों के प्रति इस तरह की भावना के चलते कुछ लोगों का यह कहना कि औरंगजेब ने कई मंदिर बनवाये, कई मंदिरों को आर्थिक सहायता की, अगर सच है तो निश्चित रूप से या तो यह झूठ है अथवा उसके कोई अन्य कारण रहे होंगे।

नवम सिक्ख गुरु तेगबहादुर जी को जिस बेरहमी से सार्वजनिक रूप से औरंगजेब ने मरवाया वह उसकी धार्मिक असहिष्णुता एवं क्रूरता की पराकाष्ठा है। चाहे उसे कुछ इतिहासकार राजनीतिक रंग देते दिखते हैं। विलियम इरविन लिखता है कि गुरु तेग बहादुर को कई सप्ताह तक यातना दी गई कि वह इस्लाम स्वीकार कर लें। परन्तु उन्होंने इन्कार

कर दिया तब उनका कत्ल कर दिया गया। सिख परम्परा में कहा जाता है कि धर्म परिवर्तन करने के कारण ही भाई मतीदास के टुकड़े-टुकड़े कर दिए, भाई दयाल दास को खौलते पानी के कड़ाह में डाल दिया तथा गुरु तेग बहादुर को पिंजरे में बन्द कर सार्वजनिक स्थान पर ले जाकर उनका सर काटा गया।

अपने विरोधियों को सार्वजनिक रूप से मारना औरंगजेब का शगल था। डॉ. बरनीयर जो कि दारा शिकोह के कत्ल का चश्मदीद गवाह था, के अनुसार २६ अगस्त १६५६ को दारा शिकोह और उसके बेटे को एक हाथी पर बिठाकर के दिल्ली की गलियों में ले जाया गया। डॉ. बरनीयर लिखता है कि दारा शिकोह के प्रति सहानुभूति रखने वाली बहुत सारी भीड़ वहाँ एकत्रित हो गई जो कि रो रही थी व चिल्ला रही थी। परन्तु औरंगजेब ने दारा पर धर्म त्यागी (apostate) का आरोप लगाकर उसका सर कलम कर दिया।

कहते हैं कि जब व्यक्ति की मौत आती है तब उसकी अपने जीवन में किए हुए कर्मों पर नजर डालने की मानसिकता बनती है। अगर औरंगजेब ने एक प्रजावत्सल भेदभाव रहित बादशाह के रूप में काम किया होता तो अन्तिम समय में उसे किस चीज का पश्चाताप था? उसका अपराध बोध ही उस समय में उसे कचोट रहा था। जिस प्रकार विश्वविजेता सिकन्दर ने तलवार के बल पर हजारों लाखों लोगों की हत्या की और मृत्यु समय में उसे इस पर पश्चाताप हुआ। वह अपने वतन जाने को तड़पता रहा पर मौत ने उसे इतना अवसर नहीं दिया। ठीक ऐसी दशा औरंगजेब की हुई साम्राज्य का लोभी यह सम्राट वृद्धावस्था में भी स्वयं आक्रमण की बागड़ोर संभाले सुदूर दक्षिण तक गया परन्तु लौटते समय दुर्बलता व बीमारी के कारण कई-कई जगह महीनों रुकना पड़ा। और अन्त में अहमदनगर में उसकी मृत्यु हो गई वह अपनी इच्छानुसार दिल्ली नही पहुँच सका। उसने अपने बेटे शाहजादे आजम को पत्र लिखा था उसे अत्यन्त संक्षिप्त रूप से यहाँ पर वर्णित कर रहे हैं-

वह लिखता है कि 'मैं बूढ़ा और दुर्बल हो रहा हूँ। जब मेरा जन्म हुआ था तो मेरे निकट बहुत से व्यक्ति थे किन्तु अब मैं अकेला जा रहा हूँ। .... मैंने देश व उसकी प्रजा के लिए भला नहीं किया। मेरा जीवन ऐसे ही निरर्थक बीत गया। जैसी मेरी दशा है .... अल्लाह से बिछुड़ा हुआ और मेरे हृदय में कोई शान्ति नहीं है .... इस संसार में मैं कुछ भी लेकर नहीं आया। किन्तु अब पापों का भारी बोझ लेकर जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि मेरे लिए अल्लाह ने क्या दण्ड सोच रखा है .... खैर जो होगा हो मैंने तो अपनी नाव पानी में छोड़ दी है। विदा अलविदा।

अपने दूसरे पुत्र कामबख्श को भी उसने ऐसा पत्र लिखा। औरंगजेब की वसीयत पढ़ने पर भी उसकी मानसिक दशा प्रकट होती है। परन्तु एक विचित्र बात है कि **इस समय में भी उसने स्पष्ट लिखा है कि 'अपने बेटों पर कभी भूलकर भी ऐतबार न करना, न उनके साथ कभी नजदीकी ताल्लुक रखना।'** यह बड़ी आश्चर्यजनक सीख है। शायद मुगलों की परम्परा में बेटों के द्वारा बापों को मारा जाना ही इसका कारण रहा होगा।

औरंगाबाद के निकट खुल्दाबाद नामक छोटे से गाँव में जो औरंगजेब आलमगीर का मकबरा बनाया गया है उसमें उसे सीधे-साधे तरीके से दफन किया गया।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, उदयपुर
सचल स्वरदूत- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

❑❑❑

जन्म दिवस पर विशेष

गदर पार्टी के प्रस्तोता

लाला हरदयाल

भारतीय परम्परा त्याग और बलिदान से ओत-प्रोत है। यहाँ ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं जब लोकहित में सज्जनों और देवियों ने अपने सुखों का सहर्ष त्याग किया है। लाला हरदयाल भी ऐसा ही व्यक्तित्व है।

उनकी पत्नी माता सुन्दर देवी के बारे में कहा जाता है कि वे अनिंद्य सुन्दरी थीं परन्तु यह रूप हरदयाल जी के पैरों में बेड़ियाँ न डाल सका। भारत माता की सर्वविध सेवा और उसे गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराना उनका लक्ष्य था।

लाला हरदयाल का जन्म दिल्ली में माता भोली रानी तथा पिता, उर्दू तथा फारसी के पण्डित, गौरीदयाल माथुर के घर में १४ अक्टूबर १८८४ को हुआ। १७ वर्ष की आयु में सुन्दर रानी जी के साथ आपका विवाह हुआ। लाला जी प्रारम्भ से ही आर्यसमाज के सम्पर्क में आ गए थे। लाला हरदयाल की स्मृति असाधारण थी। इनके मित्र १२ घंटे के नोटिस पर इनसे शेक्सपीयर का कोई भी नाटक सुन लेते थे। आपने जब राजकीय महाविद्यालय, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य तथा इतिहास में एम.ए. किया तो असाधारण प्रदर्शन के कारण इन्हें सरकार की ओर से २०० पौण्ड की छात्रवृत्ति दी गयी। हरदयाल जी उस छात्रवृत्ति के सहारे आगे पढ़ने के लिये लन्दन चले गये और सन् १९०५ में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। वहाँ भी उन्होंने दो छात्रवृत्तियाँ और प्राप्त कीं। लन्दन में ये महर्षि दयानन्द के आद्यशिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा और उनके द्वारा स्थापित 'इण्डिया हाउस' के सम्पर्क में आये। अपनी मातृभूमि की दुर्दशा के कारणों पर विचार कर आप इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारतीयों में से अंग्रेजियत के मोह को छुड़ाना होगा तथा असहयोग को एक हथियार बनाना होगा। इस हेतु विदेशों में रह रहे भारतीयों के मन में देश-प्रेम की मशाल प्रज्ज्वलित करनी होगी। लाला हरदयाल के चरित्र की एक बड़ी विशेषता थी कि वे जैसा सोचते थे उसे लागू करने में फिर देर नहीं करते थे। लाला लाजपत राय ने अपनी पुस्तक 'यंग इंडिया' में लिखा है-

He came to believe that the English were undermining Hindu character; that their educational policy and methods had been designed to destroy Hinduism and to perpetuate the political bondage of the Hindus by destroying their social consciousness and their national individuality -------- **came to the conclusion that the British were deliberately Anglicizing the Indians with a view to destroying their nationalism and to impressing them with the inferiority of their institutions so that they might value the British connection and become Britishers. He thought it wrong to study in their institutions take their degrees and otherwise benefit from anything which they did as rulers of India.**

अपने चिंतन को मूर्त रूप देते हुए आपने सन् १९०७ में आई.सी.एस. छोड़ आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय तत्काल छोड़ दिया और लन्दन में देशभक्त समाज स्थापित कर असहयोग आन्दोलन का प्रचार करने लगे । उनका मानना था कि-

No Indian who really loves his country ought to compromise his principle and barter his rectitude for any favour whatever at the hands of alien oppressive rulers of India.

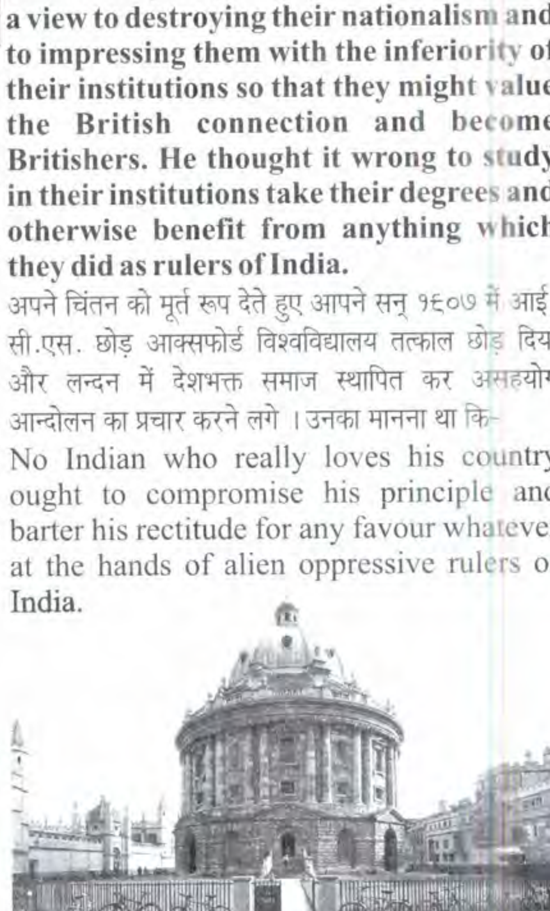

लालाजी ने भारत आने से पूर्व ही पाश्चात्य प्रभाव को अपने ऊपर से झटक दिया। उन्होंने भारतीय वेशभूषा को अपनाते हुए कुर्ता, पायजामा, शॉल, हिन्दुस्तानी जूतों का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया।

लाला हरदयाल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के उन अग्रणी क्रान्तिकारियों में से थे जिन्होंने विदेश में रहने वाले भारतीयों को देश की आजादी की लड़ाई में योगदान के लिये प्रेरित व प्रोत्साहित किया। इसके लिये उन्होंने अमरीका में

जाकर गदर पार्टी की स्थापना की। वे उसके संस्थापक सचिव थे। भारत को स्वतन्त्र करने के लिये लालाजी की यह योजना थी कि जनता में राष्ट्रीय भावना जगाने के पश्चात् पहले सरकार की कड़ी आलोचना की जाये फिर युद्ध की तैयारी की जाये, तभी कोई ठोस परिणाम मिल सकता है, अन्यथा नहीं। कुछ दिनों विदेश में रहने के बाद १६०८ में वे भारत वापस लौट आये।

लालाजी के कॉलेज में मोहम्मद अल्लामा इकबाल भी प्रोफेसर थे जो वहाँ दर्शनशास्त्र पढ़ाते थे। उन दोनों के बीच अच्छी मित्रता थी। जब लालाजी ने प्रो. इकबाल से एसोसियेशन के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करने को कहा तो वह सहर्ष तैयार हो गये। इस समारोह में इकबाल ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' तरन्नुम में सुनायी थी।

लाला जी के आलस्य-त्याग, अहंकार-शून्यता, सरलता, विद्वत्ता, भाषा पर आधिपत्य, बुद्धिप्रखरता, राष्ट्रभक्ति का ओज तथा परदुःख में संवेदनशीलता जैसे असाधारण गुणों के कारण कोई भी व्यक्ति एक बार उनका दर्शन करते ही मुग्ध हो जाता था। **वे अपने सभी निजी पत्र हिन्दी में ही लिखते थे। लाला जी बहुधा यह बात कहा करते थे- 'अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से राष्ट्रीय चरित्र तो नष्ट होता ही है राष्ट्रीय जीवन का स्रोत भी विषाक्त हो जाता है। अंग्रेज ईसाइयत के प्रसार द्वारा हमारे दासत्व को स्थायी बना रहे हैं।'**

लाला जी के आग्नेय प्रवचनों के परिणामस्वरूप विद्यार्थी कालेज छोड़ने लगे और सरकारी कर्मचारी अपनी-अपनी नौकरियाँ। भयभीत सरकार इन्हें गिरफ्तार करने की योजना बनाने में जुट गयी। लाला लाजपत राय के परामर्श को शिरोधार्य कर आप फौरन पेरिस चले गये और वहीं रहकर जेनेवा से निकलने वाली मासिक पत्रिका 'वन्दे मातरम्' का सम्पादन करने लगे। लाला हरदयाल बार-बार अज्ञात प्रवास में चले जाते थे तथा स्वाध्याय में रत रहते थे ,आगे की योजना तैयार करते थे। भाई परमानन्द के कहने पर इन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में हिन्दू दर्शन पर कई व्याख्यान दिए। अमरीकी बुद्धिजीवी इन्हें हिन्दू सन्त, ऋषि एवं स्वतन्त्रता सेनानी कहा करते थे। आप १६१२ में स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में हिन्दू दर्शन तथा संस्कृत के आनरेरी प्रोफेसर नियुक्त हुए। वहीं रहते हुए आपने गदर पत्रिका निकालनी प्रारम्भ की। पत्रिका ने अपना रंग दिखाना

प्रारम्भ ही किया था कि जर्मनी और इंग्लैण्ड में भयंकर युद्ध छिड़ गया। स्वदेशी के प्रति उनका अनन्य लगाव था। वे अमरीका में रह रहे सिखों को अपने देश वापस लौट देश की सेवा करने हेतु प्रेरित करते थे। आपके उन व्याख्यानों के

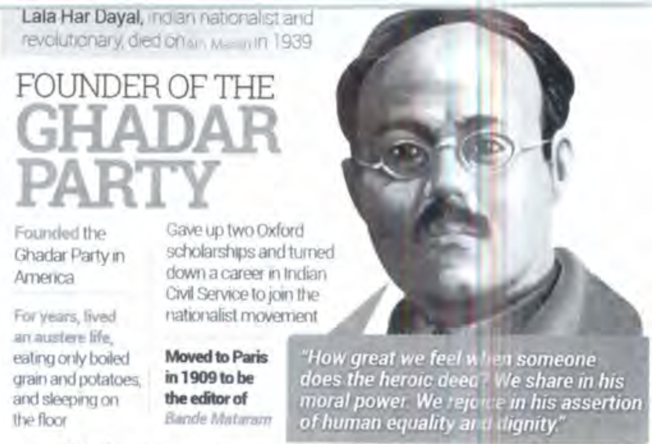

प्रभाव से ही लगभग दस हजार पंजाबी सिक्ख भारत लौटे। कितने ही रास्ते में गोली से उड़ा दिये गये। जिन्होंने भी विप्लव मचाया वे सूली पर चढ़ा दिये गये। लाला हरदयाल ने उधर अमरीका में और भाई परमानन्द ने इधर भारत में क्रान्ति की अग्नि को प्रचण्ड किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि दोनों ही गिरफ्तार कर लिये गये। भाई परमानन्द को पहले फाँसी का दण्ड सुनाया गया बाद में उसे काला पानी की सजा में बदल दिया गया परन्तु हरदयाल जी अपने बुद्धि-कौशल्य से अचानक स्विट्जरलैण्ड खिसक गये और जर्मनी के साथ मिल कर भारत को स्वतन्त्र करने के यत्न करने लगे। अंत में लालाजी ब्रिटेन में ही रहने लगे। यहाँ उन्होंने अपनी अद्भुत देन के रूप में उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखे। **Hints for self culture (1934)** आपकी प्रसिद्ध पुस्तक है।

१६२७ में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें भारत लौटने की अनुमति प्रदान कर दी। जब वे भारत लौट रहे थे तब फिलाडेल्फिया में रहस्यमयी परिस्थितियों में उनका निधन हो गया। उनके मित्र लाला हनुमन्त सहाय का मानना था कि उन्हें विष देकर उनका प्राणान्त किया गया।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

□□□

श्री ओमप्रकाश मुंजाल का देहावसान

प्रसिद्ध उद्योगपति एवं इस न्यास के मान्य ट्रस्टी महात्मा सत्यानन्द मुंजाल के लघु भ्राता श्री ओम प्रकाश मुंजाल का देहावसान १३ अगस्त २०१५ को लुधियाना में हो गया। कौन नहीं जानता कि सम्पूर्ण मुंजाल परिवार आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रति समर्पित है। अतएव ओम प्रकाश जी का निधन आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है। न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक संवेदनाएँ।

'विश्व डाक दिवस'
(९ अक्टूबर) पर विशेष

– कृष्णा कुमार यादव

कहाँ गई वो चिट्ठियाँ

अभी हाल ही में मेरे एक मित्र की सगाई सम्पन्न हुई। पेशे से इंजीनियर और हाईटेक सुविधाओं से लैस मेरा मित्र अक्सर सेलफोन या चैटिंग के द्वारा अपनी मंगेतर से बातें करता रहता। तभी एक दिन उसे अपनी मंगेतर का पत्र मिला। उसे यह जानकर ताज्जुब हुआ कि पत्र में तमाम ऐसी भावनायें व्यक्त की गई थीं, जो उसे फोन पर या चैटिंग के दौरान भी नहीं पता चली थीं। अब मेरे मित्र भी अपनी खूबसूरत मनोभावनाओं को मंगेतर को पत्र लिखकर प्रकट करने लगे हैं। इसी प्रकार बिहार के एक गाँव से आकर दिल्ली में बसे अधिकारी को अपनी माँ की बीमारी का पता तब चला जब वे एक साल बाद गाँव लौटकर गये। उन्हें जानकर आश्चर्य हुआ कि इतनी लंबी बीमारी उनसे कैसे छुपी रही, जबकि वे हर सप्ताह अपने घर का हाल-चाल फोन द्वारा लेते रहते थे। आखिरकार उन्हें महसूस हुआ कि यदि इस दौरान उन्होंने घर से पत्र-व्यवहार किया होता तो बीमारी की बात जरूर किसी न किसी रूप में पत्र में व्यक्त होती।

चिट्ठियाँ लिखना और पढ़ना किसे नहीं भाता। शब्दों के विस्तार के साथ बहुत सी अनकही भावनाएँ मानो इन चिट्ठियों में सिमटती जाती थीं। आपको याद है, आपने अंतिम बार कब पत्र लिखा था? वह लाल रंग का लेटर बाक्स याद है, जिसे हम बचपन में हनुमान जी का प्रतिरूप समझते थे, कि यह हमारे डाले गए पत्रों को रात में उड़ाकर गंतव्य स्थान तक पहुँचा देते हैं। न जाने कितनी बार स्कूल के दिनों में परिजनों को रात में जागकर चिट्ठियाँ लिखी होंगीं। पर आज इण्टरनेट, ई-मेल, मोबाईल ने मानो पत्रों की दुनिया ही बदल दी हो। प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार लॉर्ड बायरन पत्र को एकान्त का साथी मानते थे। उनका मानना था कि अगर तुम एकान्त में सबसे अच्छे मित्र की तलाश में हो, तो अपने किसी को पत्र लिखो। यह जीवन की धूप-छाँव में सबसे ईमानदारी भरा पल होगा, जो तुम्हें अपने सबसे करीब ले जाएगा। बायरन का कहना था कि पत्र लेखन एक प्रकार का चिन्तन है, जो मस्तिष्क को स्थिरता देता है। पत्र लिखना जितना मायने रखता है, उतना ही उसे पढ़ना भी।

सभ्यता के आरम्भ से ही मानव किसी न किसी रूप में पत्र लिखता रहा है। दुनिया का सबसे पुराना ज्ञात पत्र २००९ ईसा पूर्व का बेबीलोन के खण्डहरों से मिला था, जोकि वास्तव में एक प्रेम पत्र था और मिट्टी की पटरी पर लिखा गया था। कहा जाता है कि बेबीलोन की किसी युवती का प्रेमी अपनी भावनाओं को समेटकर उससे जब अपने दिल की बात कहने बेबीलोन तक पहुँचा तो वह युवती तब तक वहाँ से जा चुकी थी। वह प्रेमी युवक अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पाया और उसने वहीं मिट्टी के फर्श पर खोदते हुए लिखा-''मैं तुमसे मिलने आया था, तुम नहीं मिलीं।'' यह छोटा सा संदेश विरह की जिस भावना से लिखा गया था, उसमें कितनी तड़प शामिल थी। इसका अंदाजा सिर्फ वह युवती ही लगा सकती थी जिसके लिये इसे लिखा गया। भावनाओं से ओत-प्रोत यह पत्र २००९ ईसा पूर्व का है और इसी के साथ पत्रों की दुनिया ने अपना एक ऐतिहासिक सफर पूरा कर लिया है।

जब संचार के अन्य साधन न थे, तो पत्र ही संवाद का एकमात्र माध्यम था। दुनिया के किसी खामोश कोने में बैठकर दूसरे कोने में बैठे किसी अनाम साथी से संवाद, ऊष्मा से ज्यादा उत्तेजना का सबब हो जाता है। यह एकालाप नहीं बल्कि अकेलेपन से जोड़ने और अपनी संवेदनाओं को मजबूत करने का जरिया है। पत्रों का काम मात्र सूचना देना ही नहीं बल्कि इनमें एक अजीब रहस्य या गोपनीयता, संग्रहणीयता, लेखन कला एवं अतीत को जानने

का भाव भी छुपा होता है। पत्रों की सबसे बडी विशेषता इनका आत्मीय पक्ष है। यदि पत्र किसी खास का हुआ तो उसे छुप-छुप कर पढ़ने में एवम् संजोकर रखने तथा मौका पाते ही पुराने पत्रों के माध्यम से अतीत में लौटकर विचरण करने का आनंद ही कुछ और है।

पत्रों की दुनिया बेहद निराली है। दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक यदि पत्र अबाध रूप से आ-जा रहे हैं तो इसके पीछे 'यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन' का बहुत बड़ा योगदान है, जिसकी स्थापना ९ अक्टूबर १८७४ को स्विटजरलैंड में हुई थी। यह ९ अक्टूबर पूरी दुनिया में 'विश्व डाक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। तब से लेकर आज तक डाक-सेवाओं में वैश्विक स्तर पर तमाम क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं और भारत भी इन परिवर्तनों से अछूता नहीं है। डाक सेवाओं का इतिहास बहुत पुराना है, पर भारत में एक विभाग के रूप में इसकी स्थापना १ अक्तूबर १८५४ को लार्ड डलहौजी के काल में हुई। डाकघरों में बुनियादी डाक सेवाओं के अतिरिक्त बैंकिंग, वित्तीय व बीमा सेवाएँ भी उपलब्ध हैं। एक तरफ जहाँ डाक-विभाग सार्वभौमिक सेवा दायित्व के तहत सब्सिडी आधारित विभिन्न डाक सेवाएँ दे रहा है, वहीं पहाड़ी, जनजातीय व दूरस्थ अंडमान व निकोबार द्वीप समूह जैसे क्षेत्रों में भी उसी दर पर डाक सेवाएँ उपलब्ध करा रहा है।

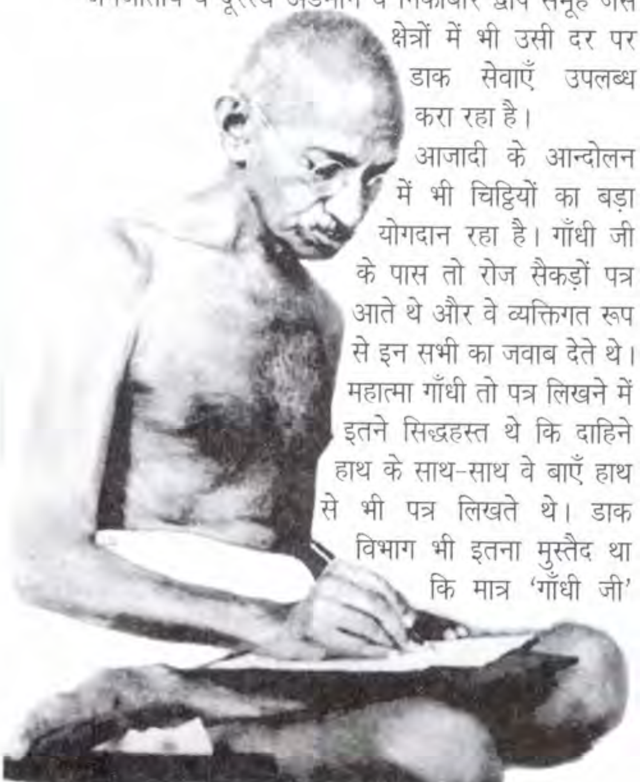

आजादी के आन्दोलन में भी चिट्ठियों का बड़ा योगदान रहा है। गाँधी जी के पास तो रोज सैकड़ों पत्र आते थे और वे व्यक्तिगत रूप से इन सभी का जवाब देते थे। महात्मा गाँधी तो पत्र लिखने में इतने सिद्धहस्त थे कि दाहिने हाथ के साथ-साथ वे बाएँ हाथ से भी पत्र लिखते थे। डाक विभाग भी इतना मुस्तैद था कि मात्र 'गाँधी जी' लिखे पते के आधार पर उन्हें कहीं भी चिट्ठियाँ पहुँचा देता था। यह अनायास ही नहीं है आज भी डाक-टिकटों पर भारत में सबसे ज्यादा गाँधी जी के ही दर्शन होते हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू अपनी पुत्री इन्दिरा गाँधी को जेल से भी पत्र लिखते रहे। ये पत्र सिर्फ पिता-पुत्री के रिश्तों तक

सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें तात्कालिक राजनैतिक एवं सामाजिक परिवेश का भी सुन्दर चित्रण है। इन्दिरा गाँधी के व्यक्तित्व को गढ़ने में इन पत्रों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। आज ये किताब के रूप में प्रकाशित होकर ऐतिहासिक दस्तावेज बन चुके हैं। इन्दिरा गाँधी ने इस परम्परा को जीवित रखा एवं दून में अध्ययनरत अपने बेटे राजीव गाँधी को घर की छोटी-छोटी चीजों और तात्कालिक राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों के बारे में लिखती रहीं। एक पत्र में तो वे राजीव गाँधी को रीवा के महाराज से मिलीं सौगातों के बारे में भी बताती हैं। तमाम राजनेताओं, साहित्यकारों के पत्र समय-समय पर पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित होते रहते हैं। इनसे न सिर्फ उस व्यक्ति विशेष के संबंध में जाने अनजाने पहलुओं का पता चलता है बल्कि तात्कालिक राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक परिवेश के संबंध में भी बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। इसी ऐतिहासिक महत्व के कारण आज भी पत्रों की नीलामी लाखों रुपयों में होती हैं।

हाल का घटनाक्रम याद करें तो अन्ना हजारे जब आन्दोलन पर बैठे तो रालेगनसिद्धि डाकघर गुलजार हो गया, जहाँ रोज अन्ना हजारे के नाम से ५००-७०० पत्र आ रहे थे। फेसबुक और नेट पर किसने क्या कहा, यह अन्ना की टीम भले ही देखती हो, पर अन्ना के लिए शायद ही संभव हो पाता हो ? पर ये चिट्ठियाँ तो उन्हें जहाँ प्रेरित करती थीं, वहीं इन्हें वास्तव में वे पढ़ते भी थे। यह अलग बात है कि

इन सभी का जवाब देना उनके लिए संभव नहीं था, पर चिट्ठियों की उपस्थिति उन्हें जरूर आश्वस्त करती थी। दिलीप कुमार ने 'ब्लैक' फिल्म देखने के बाद अमिताभ बच्चन को बधाई पत्र लिखा। अमिताभ ने यह पत्र ड्राईंग रूम में सजा दिया है।

पत्रों को लेकर तमाम बातें कही जाती हैं। हम सभी ने वो वाली कहानी सुनी है, जिसमें एक किसान पैसों के लिए भगवान को पत्र लिखता है और उसका विश्वास कायम रखने के लिए पोस्टमास्टर अपने स्टाफ से पैसे एकत्र कर उसे मनीऑर्डर करता है। आर. के. नारायण की एक कहानी है - पोस्टमैन। उसमें एक डाकिया किसी की मृत्यु के बारे में आई एक चिट्ठी लंबे समय तक अपने पास रोके रखता है क्योंकि गाँव में एक लड़की की शादी की तैयारियाँ चल रही हैं। चिट्ठियों से हमारे समाज के भावनात्मक संबंध ने उसे हमारे साहित्य और सिनेमा में बखूबी स्थान दिया है।

कहते हैं कि पत्रों का संवेदनाओं से गहरा रिश्ता है और यही कारण है कि पत्रों से जुड़े डाक विभाग ने तमाम प्रसिद्ध विभूतियों को पल्लवित-पुष्पित किया है। अमेरिका के राष्ट्रपति रहे अब्राहम लिंकन पोस्टमैन, तो भारत में पदस्थ वायसराय लार्ड रीडिंग डाक वाहक रहे। विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक व नोबेल पुरस्कार विजेता सी.वी. रमन भारतीय डाक विभाग में अधिकारी रहे वहीं प्रसिद्ध साहित्यकार व 'नील दर्पण' पुस्तक के लेखक दीनबन्धु मित्र पोस्टमास्टर थे। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित लोकप्रिय तमिल उपन्यासकार पी.वी. अखिलंदम, राजनगर उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित अमियभूषण मजूमदार, फिल्म निर्माता व लेखक पद्मश्री राजेन्द्र सिंह बेदी, मशहूर फिल्म अभिनेता देवानन्द डाक कर्मचारी रहे हैं। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द जी के पिता अजायबलाल डाक विभाग में ही क्लर्क रहे। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता मशहूर लेखिका महाश्वेता देवी ने आरम्भ में डाक-तार विभाग में काम किया था तो प्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ० राष्ट्रबन्धु भी पोस्टमैन रहे। सुविख्यात उर्दू समीक्षक पद्मश्री शम्सुररहमान फारूकी, शायर कृष्ण बिहारी नूर, महाराष्ट्र के प्रसिद्ध किसान नेता शरद जोशी सहित तमाम विभूतियाँ डाक विभाग की गोद में अपनी सृजनात्मक-रचनात्मक काया का विस्तार पाने में सफल रहीं।

हाल ही में एक रिपोर्ट पर जाकर निगाह अटकी कि, जज्बातों को अल्फाज देती, कागज के कुछ पन्नों में सिमटी चिट्ठी लिखने की कला मानो खत्म सी होती जा रही है। ब्रिटेन में चैरिटी वर्ल्ड विजन द्वारा हुए एक सर्वेक्षण के अनुसार प्राइमरी स्कूल में पढ़ने वाले करीब ५० फीसदी बच्चे ठीक से नहीं जानते कि चिट्ठी कैसे लिखी जाती है। सात से लेकर १४ साल के बच्चों से पूछा गया कि क्या उन्होंने पिछले एक साल में चिट्ठियाँ लिखने की कोशिश की है तो चार में से एक बच्चे का जवाब था, नहीं। जबकि पिछले एक हफ्ते में इनमें से ५० फीसदी से ज्यादा बच्चों ने ईमेल किया है या सोशल नेटवर्किंग साइट पर संदेश भेजे हैं। अध्ययन से पता चलता है कि बहुत से बच्चे न तो चिट्ठियाँ लिखते हैं, न ही उन्हें किसी की चिट्ठी मिलती है। आँकड़ों के मुताबिक पाँच में एक बच्चे को कभी किसी ने चिट्ठी नहीं लिखी। करीब ४५ फीसदी बच्चों ने कहा कि या तो उन्हें चिट्ठी लिखनी बिल्कुल नहीं आती या वे पक्के तौर पर नहीं कह सकते। ये सर्वेक्षण ब्रिटेन के ११८८ बच्चों में किया गया। वाकई यह स्थिति शोचनीय है। बच्चों की शिक्षा से जुड़े मामले की विशेषज्ञ सू पामर कहती हैं, 'जब आप खुद कलम से कुछ लिखते हैं तो इसके जरिए लिखने वाला ये दर्शाता है कि वे उस रिश्ते को अपना वक्त दे रहा है। तभी तो हम पुरानी चिट्ठियों को सम्भाल कर रखते हैं।'

आज टेक्नालाजी के दौर में लोग पत्रों की अहमियत भूलते जा रहे हैं, पर इसी के साथ वो आत्मीयता भी गुम होती जा रही है। भावनाओं के विलोपन के साथ-साथ अब वास्तविक जीवन से धीरे-धीरे चिट्ठियाँ लुप्त हो रही हैं। कभी डाकिया की राह ताकते रहने वाला समाज आज अपने प्रियजनों का हाल जानने के लिए मोबाइल फोन के एस.एम.एस., ई-मेल के इनबाक्स और फेसबुक पर क्लिक कर रहा है। पर चिट्ठियाँ अब रूप बदलकर सामने आ रही हैं। जब टेलीफोन ने चिट्ठियों को आउटडेटेड किया था तो किसने सोचा था कि ये चिट्ठा बनकर फिर सामने आ जायेंगीं। यही क्यों, फेसबुक और टिवट्र पर दिनभर की अपडेट देने वाले भी एक तरह से चिट्ठियाँ लिखते हैं। फर्क मात्र इतना है कि वे हाथ से लिखी

गयी चिट्ठियाँ थी और यह स्मार्टफोन, टेबलेट और लैपटॉप पर लिखी गयी हैं। यहाँ पाश्चात्य विचारक गैरिसन कीलर की किताब 'लिविंग होम' का जिक्र जरूरी है। किताब में वह लिखते हैं कि पत्र लेखन इस दुनिया का सरलतम कार्य है, जो हमारे जीवन से लुप्त हो रहा है। इसीलिए वह कहते हैं कि पत्र-सा कोई उपहार नहीं। इसे देने का विचार मत कीजिए, बस दीजिए। गैरिसन कहते है कि किसी भी पत्र को लिखते समय व्याकरण और शैली की बात सोचना व्यर्थ है। आप बस अपने समाचार देते जाइए। आप कहाँ गए, किस-किस से मिले, उन्होंने क्या कहा, आप क्या सोचते हैं? इससे न केवल आप धन्य होंगे, बल्कि पत्र पाने वाला भी। पत्र हमें एक भावनात्मक सूत्र में बंधे होने का एहसास कराते हैं। गैरिसन की यही बात ब्लॉग व सोशल साइट्स पर भी लागू होती है, जहाँ लोग एक दूसरे से छोटी छोटी बातें साझा कर रहे हैं और लोग उन्हें हाथों-हाथ ले रहे हैं। 'इंस्टेंट' के इस दौर में रिश्ते-नाते, सम्बन्ध, भावनाएँ सब कुछ 'इंस्टेंट' हो गए हैं। कट-पेस्ट, लाइक, शेयर, के इस दौर में भला किसे फुर्सत है लम्बी चिट्ठियों या चिट्ठों को पढ़ने की। भला हो उन कुछेक लोगों का, जिन्होंने इन विधाओं को जिन्दा रखा है। खत्म होना तो हर किसी की नियति है, पर अपने दौर में परिवेश को कोई भी व्यक्ति या विधा कितना प्रभावित कर पाई, यह महत्वपूर्ण है।

१९वीं शताब्दी में युग प्रवर्तक, महान् धर्म संशोधक, वेदोद्धारक, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विभिन्न राजाओं, नबावों, समाजिक पुरुषों को लिखे गए पत्र तथा लोगों द्वारा ऋषि को लिखे गए पत्र तत्कालीन सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक परिस्थितियों को जानने तथा उनका मूल्यांकन करने हेतु अनमोल खजाना है। यद्यपि सहस्रों पत्र अनुपलब्ध रहे अथवा विनष्ट हो गए, परन्तु ४ खण्डों में प्रकाशित 'पत्र व विज्ञापन' जानकारी का भण्डार है, जितनी बार पढो कोई नई जानकारी दे देता है।

- सम्पादक

चिट्ठियों से चिट्ठों और सोशल नेटवर्किंग साइट्स तक के इस सफर में बहुत कुछ बदला है, आगे भी बदलेगा। हाई-टेक होते इस दौर में कलम का स्थान की-बोर्ड ने ले लिया है। शब्दों के भावार्थ बदलने लगे हैं, उनमें शुद्धता नहीं बल्कि चलताऊपन आ गया है। पर जब यही बात रिश्तों-संवेदनाओं पर लागू होती है तो असहजता महसूस होती है। चिट्ठियाँ लिखना कम हुआ तो लिफाफा देख मजमून भांपने वाली पूरी जमात का अस्तित्व खतरे में है। मोबाइल फोन और कम्प्यूटर से कुछ भांपा नहीं जा सकता। पर इन सबके बीच यह बेहद जरूरी है कि संवेदनाएं अपना रूप न परिवर्तित करें। टेक्नालाजी ने दिलों की दूरियाँ इतनी बढ़ा दी हैं कि बिल्कुल पास में रहने वाले अपने इष्ट मित्रों और रिश्तेदारों की भी लोग खोज-खबर नहीं रखते। ऐसे में युवा पीढ़ी के अन्दर संवेदनाओं को बचा पाना कठिन हो गया है। तभी तो पत्रों की महत्ता को देखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. को पहल कर कक्षा आठ के पाठ्यक्रम में ''चिट्ठियों की अनोखी दुनिया'' नामक अध्याय को शामिल करना पड़ा। चिट्ठियों/पत्रों को लेकर गाए न जाने कितने गीत आज भी होंठ गुनगुना उठते हैं। तभी तो अन्तरिक्ष-प्रवास के समय सुनीता विलियम्स अपने साथ भगवद्गीता और गणेशजी की प्रतिमा के साथ-साथ पिताजी के हिन्दी में लिखे पत्र ले जाना नहीं भूलीं। हसरत मोहानी ने यूँ ही नहीं लिखा था-

लिक्खा था अपने हाथों से जो तुमने एक बार।
अब तक हमारे पास है वो यादगार खत ।।

निदेशक डाक सेवाएँ,
राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र, जोधपुर -३४२००१
मो.- ०९४१३६६६५९९

□□□

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था; कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान; दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान; उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ. मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी; टाण्डा, श्री प्रधान जी; मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज; टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी; उदयपुर, श्री सुरेशपाल; यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना; कोटा, श्रीमती सुमन सूद; कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी; न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी; उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक); ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी; चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास; नई दिल्ली, श्री बृज वधवा; अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य; उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश; हरदोई

मर्यादा पुरुषोत्तम की मर्यादा

स्व. आचार्य प्रेमभिक्षु

श्री राम जितेन्द्रिय थे। अरण्यवास में उनकी यह साधना निखर कर सामने आयी है। परन्तु, सीता के प्रति मृदु-आत्मीय भाव रामायण में अनेकत्र परिलक्षित होते हैं। दीर्घ समय तक ब्रह्मचर्य साधना के विचार से राम, सीता के प्रति उदासीन रहे या उपेक्षा का भाव रखते रहे, ऐसा नहीं है। अनेक प्रसंगों में राम का अगाध सीता प्रेम पूरे उत्कर्ष के साथ देखने में आता है। वन गमन के समय किन कोमल शब्दों में राम ने सीता को समझाने का प्रयास किया और अन्त में सीता की पति-निष्ठा का सम्मान करते हुए वे कहते हैं-

न देवि! तव दु:खेन स्वर्गमप्यभिरोचये।
न हि मेऽस्ति भयं किंचित्स्वयंभोरिव सर्वत:।।

- अयोध्या का.सर्ग. ३० श्लोक २७

हे देवी! मैं तुम्हें यहाँ दु:खी रखकर सुख का अनुभव कैसे कर सकता हूँ? मुझे किसी का भय है, ऐसी बात भी नहीं है। यदि तुम मेरे बिना स्वर्ग नहीं चाहतीं तो मैं भी तुम्हारे बिना स्वर्ग की इच्छा नहीं रखता। अत: तुम वन गमन की तैयारी करो। सीता के साथ वन में सम्भावित असुविधाओं को विचार कर भी राम सीता को उक्त शब्दों में अनुमति देते हैं, यह उनके उत्कट सीता-प्रेम का ही परिचायक है।

सीताहरण के प्रसंग में तो राम की मनोव्यथा फूट पड़ती है। सीता के सौन्दर्य, कोमलता और कष्टों का विचार करके साधारण पुरुषों की भाँति वे विलख पड़ते हैं। यहाँ तक कि संज्ञाहीन जैसी दशा में पशु-पक्षी और वृक्षों से सीता का समाचार पूछते हैं। सीता-वियोग के सम्पूर्ण काल में राम की मनोदशा का कुछ परिचय हनुमान द्वारा अशोक वाटिका में सीता के प्रति कहे गए निम्न शब्दों में मिल सकता है-

अनिद्र: सततं राम: सुप्तोऽपि च नरोत्तम:।
सीतेति मधुरां वाणीं व्याहरन् प्रतिबुध्यते।। - सुन्दर का.२६।४४

'हे देवि सीता! तुम्हारे वियोग में नरश्रेष्ठ राम को रात्रि को नींद नहीं आती। जो कभी सोये भी तो सीते! यह मधुर शब्द कहते हुए जाग पड़ते हैं।'

उधर श्री राम भी सीता का समाचार मिलने पर, सीता द्वारा प्रेषित चूड़ामणि को हृदय से लगाते हैं और हनुमान का अमित उपकार मानते हैं। इन सभी तथा अन्य अनेक प्रसंगों में श्री राम का सीता प्रेम देखा जा सकता है। पर उनके प्रेम की पराकाष्ठा है- एक पत्नी व्रत के आदर्श पालन में।

उस समय के राजाओं में बहुविवाह प्रथा थी। स्वयं राम के पिता महाराज दशरथ के तीन रानियाँ थीं। शृंगार विभूषिता अति सुन्दरी शूर्पणखाँ द्वारा राम से एक पत्नी की उपस्थिति में अपने साथ विवाह कर लेने का प्रस्ताव करना भी तात्कालिक बहुविवाह की प्रथा के आधार पर ही संभव है। पर राम मर्यादापुरुषोत्तम थे। वैदिक मर्यादाओं की स्थापना के लिए उन्हें ऋषियों ने तैयार किया था। भगवान मनु ने लिखा है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया:।। - मनु. ३/५६
सन्तुष्टो भार्यया भर्ता, भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वैधुवम्।। - मनु. ३/६०

नारी-सम्मान सुख-समृद्धि का मूल है। पति-पत्नी की पारस्परिक प्रसन्नता पारिवारिक कल्याण की कुंजी है। मानव धर्मशास्त्र की ये सद्शिक्षायें श्री राम ने हृदयंगम की थीं। उनके सामने यह पवित्र वेदोपदेश था-

चक्रवाकेव दम्पती। - अ.१४।२।६४

पति-पत्नी दोनों चकवा-चकवी की भाँति परस्पर प्रीति करने वाले हों। ऋग्वेद १०।८५।४२ कहा है-

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्मायुर्व्यश्नुतम।

हे दम्पति। पति पत्नी दोनों (इह+एव) यहाँ ही (स्तम्) रहो। (मा) मत (वियौष्टम) विमुक्त होओ और (विश्वम्) पूरी आयु भोगो। यहाँ 'इहैव' तुम दोनों यहाँ रहो कहा गया है। यदि एक समय में एक से अधिक पति-पत्नी का विधान होता तो 'स्तम्' द्विवचन न होकर 'स्त' बहुवचन होता।

इस वैदिक शिक्षा के अनुसार ही शूर्पणखा के प्रस्ताव पर एक कवि के शब्दों में वे कहते हैं-

हम आर्य जाति के बच्चे हैं, रघुवंशी वैदिक धर्मी हैं।
जो अधिक एक से व्याह करें, कहते हैं वेद दुष्कर्मी हैं।।

मर्यादा पुजारी श्री राम का यह एक पत्नी व्रत उस समय में बहुत प्रसिद्ध हुआ और इस व्रतनिष्ठा से श्री राम का व्यक्तित्व गौरवान्वित हो खूब चमका। यहाँ तक कि शत्रु पत्नियों ने भी-

एक नारि व्रत रघुवर केरा, लषण सुयश मैं सुनेउ घनेरा।'
कहकर राम की इस व्रतनिष्ठा का समादर किया। राम के एक पत्नी व्रत के सम्बन्ध में स्वयं सीता कहती हैं-

मनस्यापि तथा राम न चैतद्विद्यते क्वचित्।
स्वदारनिरतश्चैवनित्यमेव नृपात्मज।।

प्रभो! पर-स्त्री गमन तो आपके संकल्प में भी नहीं आया क्योंकि आप पक्के एक पत्नी व्रती हैं।

राम की आदर्श चरित्र निष्ठा का एक बहुचर्चित प्रसंग और है। कहते हैं कि जब रावण अनेक प्रयत्न करने पर सीता के मन को न जीत सका और सीता के लिए व्यग्र रहने लगा तो पहले तो कुम्भकर्ण ने उसकी इस पापवृत्ति के लिए कठोर शब्दों में भर्त्सना की फिर अन्त में उसे कहने लगा कि आप तो बड़े मायावी (विज्ञान-कौशल-कुशल) हैं। स्वयं राम का रूप धारण करके सीता के पास जाओ। सीता आपको राम समझ दौड़कर गले से लगावेगी। एक कवि के शब्दों में रावण का उत्तर इस प्रकार है-

तुम राम को रूप अनूप धरो,
पुनि जावहु वेगि सिया ढिंग भाई।
मिलिहैं भरि अंक में दौड़ि सिया,
जियजानि तुम्हें सुपिया रघुराई।।

रावण का उत्तर-

यह कारज हूँ करि देख लियौ,
नहिं पाइ स क्यौ किंचित सफलाई।
जब राम को रूप बनावत हौं,
तब मातु सी दीखति नारि पराई।।

धन्य! धन्य!! वैदिक धर्मी राम आप धन्य हैं। संसार के इतिहास में राम जैसे चरित्र का उच्च आदर्श कहाँ मिलेगा? राम का अनन्य निष्ठायुक्त सीता प्रेम और उनका एक पत्नी व्रत दोनों ही आर्य जाति के युवकों के लिए प्रेरणा, प्रकाश और जीवन का आधार रहे हैं। विशेषतः वे सज्जन जो केवल देवियों को ही पतिव्रत का उपदेश झाड़ते हैं विचार करें कि पत्नीव्रत भी उतना ही आवश्यक और पुण्यकारी है।

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश सूक्तियाँ

१. मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का **मुख्य प्रयोजन** सत्य२ अर्थ का प्रकाश करना है। पृ. सं. ४

२. इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही **मुख्य काम** है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें। पृ. सं. ४

३. यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान् लोग अन्यथा ही विचारेंगे, तथापि बुद्धिमान् लोग यथायोग्य इसका अभिप्राय समझेंगे इसलिये मैं अपने परिश्रम को सफल समझता और अपना अभिप्राय सब सज्जनों के सामने धरता हूँ। इसको देख-दिखला के मेरे श्रम को सफल करें। और इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मुझ वा सब महाशयों का **मुख्य कर्त्तव्य काम** है। पृ. सं. ७-८

५. जिस व्यापक अविनाशी सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर में सब विद्वान् और पृथिवी सूर्य आदि सब लोक स्थित हैं कि जिसमें सब वेदों का **मुख्य तात्पर्य** है, उस ब्रह्म को जो नहीं जानता, वह ऋग्वेदादि से क्या कुछ सुख को प्राप्त हो सकता है? पृ. सं. ६६-७०

६. विवाह में **मुख्य प्रयोजन** वर और कन्या का है , माता-पिता का नहीं। पृ. सं. ८३

७. परन्तु तभी गृहाश्रम में सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों। इसलिए गृहाश्रम के सुख का **मुख्य कारण** ब्रह्मचर्य और पूर्वोक्त स्वयंवर विवाह है। पृ. सं. १२३

८. सब मनुष्यादि प्राणियों की सत्योपदेश और विद्यादान से उन्नति करना संन्यासी का **मुख्य कर्म** है। पृ. सं. १३१

९. संन्यासियों का **मुख्य कर्म** यही है कि सब गृहस्थादि आश्रमों को सब प्रकार के व्यवहारों का सत्य निश्चय करा, अधर्म व्यवहारों से छुड़ा, सब संशयों का छेदन कर, सत्यधर्मयुक्त व्यवहारों में प्रवृत्त कराया करें। पृ. सं. १३२

१०.परन्तु जो इस संन्यास के **मुख्य-धर्म** सत्योपदेशादि नहीं करते, वे पतित और नरकगामी हैं। पृ. सं. १३७

११. जिस-जिस कर्म से जगत् का उपकार हो, वह-वह कर्म करना और हानिकारक छोड़ देना ही मनुष्य का **मुख्य कर्त्तव्य कर्म** है। पृ. सं. २६१

संसार का उपकार करना इस समाज का **मुख्य उद्देश्य** है। अर्थात् शारिरीक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना। (आर्य समाज का छठा नियम)

{विडम्बना है कि कुछ विद्वान् उपरलिखित प्रचुर प्रमाणों के होते हुए भी प्रथम सूक्ति में आए 'मुख्य' को अकारण प्रक्षेप मानते हैं।}

समाचार

आचार्य राजवीर शास्त्री जयन्ती

लेखनी के धनी, आर्य परम्परा के संवाहक, दयानन्द सन्देश (आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली) के सम्पादक, 'वैदिक कोश' के निर्माता, प्रख्यात् विद्वान् पण्डित राजवीर शास्त्री आज हमारे मध्य नहीं हैं। २५ सितम्बर २०१४ को उनका निधन हो गया था। आचार्य जी की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से एक स्मृति ग्रन्थ- 'आर्ष परम्परा के संवाहक आचार्य राजवीर शास्त्री' का प्रकाशन किया जा रहा है। आचार्य जी से सम्बन्धित कोई भी सामग्री, फोटो आदि लेख, संसमरण कृपया अतिशीघ्र भिजवाने का अनुरोध है। - डा. दिनेश चन्द शास्त्री, दूरभाष- ०११-२३६५८३६०

चतुर्वेद शतक महायज्ञ

आर्यसमाज मानटाउन एवं महिला आर्यसमाज सवाई माधोपुर के संयुक्त तत्वावधान में २५ से २७ सितम्बर तक महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जयपुर से पधारे डा. कृष्णपाल सिंह, जो कि यज्ञ के ब्रह्मा भी थे, के ओजस्वी प्रवचन हुए। तथा बरेली के विमलदेव अग्निहोत्री तथा करनाल से पधारी अंजली आर्या के भजनोपदेशों को भी सराहा गया। - रामजी लाल आर्य, मंत्री

राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के ३७ वें वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर ६ सितम्बर २०१५ को राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें डा. अशोक चौहान (संस्थापक अध्यक्ष- ऐमिटी शिक्षण संस्थान) तथा श्री सुभाष आर्य (महापौर- दक्षिण दिल्ली नगर निगम) का मुख्य सान्निध्य था। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर जी थे। -डा. अनिल आर्य

आर्य समाज के निर्वाचन

आर्यसमाज मंदिर शाहजहाँपुर के वार्षिक निर्वाचनों में प्रधान, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष के पद पर क्रमशः श्रीमती आशादेवी आर्या, श्री प्रमोद कुमार आर्य तथा श्री विक्रान्त कुमार वैदिक का चयन सर्वसम्मति से हुआ है। सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आर्य साहित्य के प्रचारक-प्रसारक श्री जमनादास जी आर्य (मनु कर्मवीर जी) को आर्य समाज अकोला की विनम्र श्रद्धांजलि।

ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्य साहित्य के अनवरत प्रसारक श्री जमनादास जी हजारीमल जी आर्य के निधन से आर्यसमाज की महती क्षति हुई है। वे एक समर्पित आर्य थे, आर्य या वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में दिन-रात लगे रहते थे।

अपने कपड़े के व्यवसाय में जो कमाई होती थी, उसका एक हिस्सा वैदिक साहित्य को आधे मूल्य में बेचने में लगाते थे। सत्यार्थ प्रकाश तो वे १० रुपये में ही देते थे।

३१ जुलाई २०१५ को उनकी इहलीला समाप्त हो गयी और एक सच्चे आर्य हमारे बीच से चले गये। अकोला आर्यसमाज की संवेदना पूरे परिवार के साथ है। - मंत्री आर्यसमाज, गांधी मार्ग, अकोला (महा.)

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर की ओर से दिनांक २३ अगस्त से ३० अगस्त, २०१५ तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। आर्य कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस, उ.प्र. की छात्राओं ने सस्वर वेद पाठ एवं भजन प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर डॉ. सोमदेव शास्त्री ने वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थों के उद्धरण देते हुए उपदेश के माध्यम से श्रोताओं को कर्त्तव्यबोध कराया।

पारायण यज्ञ प्रातः-सायं कालीन कुल पन्द्रह सत्रों में साट प्रमुख यजमानों के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त पूर्णाहुति के दिन उपस्थित सभी यज्ञप्रेमी बन्धुओं और मातृशक्ति ने आहुतियाँ प्रदान की।

आर्यसमाज हिरणमगरी के संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने यज्ञ आयोजन में प्रमुख भूमिका निभायी। संयोजिका श्रीमती शारदा गुप्त, उपप्रधान अनन्तदेव शर्मा, उपमंत्री मुकेश पाठक, कोषाध्यक्ष प्रेम नारायण जायसवाल, रामदयाल, दिनेश अग्रवाल, विनोद कोहली आदि ने अतिथियों का स्वागत किया एवं मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने धन्यवाद दिया। सम्पूर्ण समारोह में कुशल संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया। - आर्यसमाज हिरण मगरी, सेक्टर- ४, उदयपुर

महाशय धर्मपाल जी का अद्भुत दान

दिल्ली डेंग्यू (Dengue) के प्रकोप से कराह रही है। दवाओं के अतिरिक्त ऐसी स्थिति में विशिष्ट ओषधयुक्त सामग्री से बड़े-बड़े अग्निहोत्रों का आयोजन हो तो निश्चित लाभ होगा।

ऐसे में कर्मयोगी दानवीर महाशय धर्मपाल जी ऐसे हर यज्ञाभिलाषी को अढ़ाई किलो शुद्ध घी तथा ५ किलो औषधयुक्त सामग्री निःशुल्क देकर अग्निहोत्रों की श्रृंखला हेतु जो प्रेरणा दे रहे हैं वह स्तुत्य है। ऐसे दान को नमन। - अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १९** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- डॉ. सत्यप्रकाश गुप्ता; हरदोई (उ.प्र.), श्री सुनील कुमार; पटना (बिहार), श्री भानुराम आर्य; यमुनानगर (हरियाणा), प्रगति आर्या; कोटा (राज.), श्री ओमप्रकाश जनागल; श्रीगंगानगर (राज.), श्री संदीप पालीवाल; बीकानेर (राज.), श्री जगदीश प्रसाद विश्वकर्मा; सिहोर (म.प्र.), श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.), श्रीमती आशा रानी; उदयपुर (राज.), किरण आर्या; कोटा (राज.)। **इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।**

बुरी संगति-परिणाम भी बुरा

कथा सरित

रामदास का एक ही पुत्र था जिसका नाम रवि था और रामदास अपने बेटे को बहुत चाहता था इसलिए उसे हर वो चीज लाकर दे देता था जिसके लिए उसका बेटा एक बार उसे कह देता। सिर्फ वो ही नहीं बल्कि रवि की माँ भी उसे बहुत प्यार करती थी। वह उसे माखन मलाई खिलाकर खुश करती थी। लेकिन रवि को इन सबकी कोई कद्र नहीं थी। क्योंकि वह बुरी संगत में पड़ गया था। जुआ खेलना और अपने आवारा दोस्तों के साथ बाहर घूमना और आवारागर्दी करना यही उसकी आदत में शुमार हो गया था।

माता पिता ने बहुत समझाया किन्तु रवि को कुछ भी फर्क नही पड़ा। तब उसके पिता ने उसे समझाने का एक उपाय सोचा और रवि से कहा जाकर बाजार से कुछ सेब खरीद लाओ और उसे पैसे दे दिए। रवि जाकर बाजार से अच्छे-अच्छे सात सेब खरीद लाया। इस पर उसके पिता ने उसे कुछ रुपये और देकर कहा अब जाओ एक सड़ा गला सेब खरीद के ले आओ।

रवि एक सड़ा हुआ सेब खरीद लाया। परन्तु वह चकित था कि पिता ने उससे ये सड़ा हुआ सेब आखिर क्यों मँगवाया है। पिता की आज्ञा से रवि ने सारे अच्छे सेब एक टोकरी ने रख दिए थे। पुनः पिता के कहने से रवि ने सड़ा हुआ सेब भी अच्छे सेबों के बीच में रख दिया। अब पिता ने कहा कि अब ये टोकरी जाकर अंदर रख दो हम कल सवेरे ये सेब खायेंगे। अगले दिन जब वो लोग भोजन कर चुके तो रवि के पिता ने रवि से कहा- 'जाओ कल वाले सेब ले आओ हम खाते हैं।' जब रवि सेब लेने गया तो हैरान हो गया देखता है कि सारे सेब सड़ गये हैं उसने पिता से यह बात कह दी तो पिता ने उसे समझाया।

पिता ने कहा कि- 'देखो! जिस तरह ये सेब केवल एक सड़े हुए सेब की वजह से केवल एक ही रात में सड़ गये हैं उसी तेजी से बुरी सगत में होने पर इन्सान के साथ होता है। तुमने खुद देखा न बुरी संगत से कितनी हानि होती है। रवि पिता का आशय समझ गया था। उसने अब कसम खा ली कि अब कभी भी वह बुरी संगति में नहीं बैठेगा।

संकलन- प्रेमनारायण जायसवाल
कोषाध्यक्ष, आर्य समाज, हिरणमगरी से. ४, उदयपुर

❑❑❑

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें

और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १४ पर देखें।

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

यदि अतिसुन्दर से भी कोई ऊँचा शब्द हो तो जरूर लिखता- भावातीत, कल्पनातीत, भावना व कल्पना से परे बहुत ही ऊँचा ज्ञान है, जो शब्दों में लिखा नहीं जाता व वाणी से बोला भी नहीं जाता। सभी प्रकार का ज्ञान संगम है। हरि ऊँ धन्यवाद!

- जगन्नाथ वर्मा, कोटडी-देलवाड़ा

अति सुन्दर ढंग से ना केवल स्वामी दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज के विषय में जानकारी मिलती है बल्कि हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के विषय में बहुत कुछ जानकारी के लिए धन्यवाद!

- हंसराज आमेटा, बी- ४, मोतीनगर, नई दिल्ली

भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव जीवन यात्रा

"संन्यास रूढ़ियों के बारे में स्पष्टीकरण"

का चतुर्थ एवं अन्तिम पड़ाव संन्यासाश्रम है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश व अन्य ग्रन्थों में संन्यास से जुड़ी कुछ मान्यताओं का स्पष्टीकरण किया है जो ज्ञातव्य हैं।

(१) संन्यासी को एकत्र एक रात्रिमात्र रहना; अधिक निवास न करना चाहिये। यह बात थोड़े से अंश में तो अच्छी है कि एकत्र वास करने से जगत् का उपकार अधिक नहीं हो सकता। और अस्थानान्तर का भी अभिमान होता है, राग-द्वेष भी अधिक होता है। परन्तु जो विशेष उपकार एकत्र रहने से होता हो तो रहे। जैसे जनक राजा के यहाँ चार-चार महीने तक पंचशिखादि और अन्य संन्यासी कितने ही वर्षों तक निवास करते थे। (सत्यार्थ प्रकाश ५ समु.)

(२) संन्यासियों को सुवर्ण आदि का दान देने में कोई आपत्ति नहीं है। क्योंकि संन्यासी पुत्रेषणा, वित्तैषणा और लौकेषणा से रहित होता है। अतः वह परोपकार में उसका समुचित उपयोग कर सकेगा। (सत्यार्थ प्रकाश ५ समु. के आधार पर)

किन्तु अनाधिकारी, विषयासक्त, तथाकथित साधु संन्यासियों को धन देकर ऐशो आराम की जिन्दगी बिताने के लिए अवसर देना व्यक्ति और समाज दोनों के लिए घातक है।

(३) यदि संन्यासी गृहस्थियों आदि को वैदिक धर्म का उपदेश देकर उनका मार्गदर्शन करता है, तो वह शोभाजनक नहीं है कि वह नंगा या कौपीनधारी रहे। ब्रह्म समाज के नेता केशवचन्द्र सेन के आग्रह पर स्वयं स्वामी दयानन्द ने भी कोपीन छोड़कर पूरे वस्त्र पहनना प्रारम्भ किया था। यह स्वामी दयानन्द के संन्यासी चरित्र की विशेषता थी कि सही आग्रह किसी का भी हो वे उसे तुरन्त स्वीकार कर लेते थे।

(४) संन्यासियों को भिक्षा माँग कर खाना चाहिए। किसी गृहस्थी आदि के घर भोजन नहीं करना चाहिए, यह भी सर्वांश में ठीक नहीं है। गृहस्थी के घर संन्यासी जाएगा नही तो गृहस्थ परिवार पर प्रभाव कैसे पड़ेगा। यह सत्य है कि **संन्यासी को गृहस्थ परिवार में केवल सत्संग उपदेशार्थ ही जाना चाहिए।**

(५) चूँकि संन्यासी भी संन्यासी होने से पूर्व एक मानव है। उसका अग्नि, धातु आदि का उपयोग किये बिना जीवन-निर्वाह नहीं हो सकता। फिर वह जठराग्नि से क्यों कर बच सकेगा?

(६) यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के इस **'भस्मान्तं-शरीरम्'** मंत्र प्रमाण से (यजु. ४०/१५) मृत्यु के बाद संन्यासी का अंत्येष्टि संस्कार जमीन में शव को गाड़ कर या पानी में बहाकर नहीं, अपितु विधिवत् अग्नि में भस्म करके करना चाहिए। क्योंकि संन्यासी भी अन्य मनुष्यों के समान एक मनुष्य है।

(७) संन्यासी और यज्ञोपवीत- संन्यासी को संन्यास की दीक्षा लेते समय यज्ञोपवीत त्यागना पड़ता है। इस सम्बन्ध में अत्रि का प्रश्न है कि बिना यज्ञोपवीत के ब्राह्मण कैसे? याज्ञवल्क्य का उत्तर है कि आत्मा अर्थात् आत्मज्ञान ही उसका यज्ञोपवीत है। इसका संकेत संस्कारविधि में संन्यास के प्रकरण में अथर्ववेद ६/६ तथा तैत्तिरीय आरण्यक १०/६४ से उद्धृत प्रमाणों में उपलब्ध है।

संन्यास-ग्रहण का अधिकार

संन्यास ग्रहण करने का ब्राह्मण ही को अधिकार है, क्योंकि जो सब वर्णों में 'पूर्ण विद्वान्, धार्मिक, परोपकारप्रिय मनुष्य है, उसी का 'ब्राह्मण' नाम है। **बिना पूर्ण विद्या के, धर्म के, परमेश्वर की निष्ठा और वैराग्य के, संन्यास ग्रहण करने में संसार का विशेष उपकार नहीं हो सकता है।** वस्तुतः समस्त स्थावर तथा जंगम भूतों में प्राणधारी जीव श्रेष्ठ हैं, प्राणधारी जीवों में बुद्धिजीवी पश्वादि श्रेष्ठ हैं, बुद्धिजीवी प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है, मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं, ब्राह्मणों में विशिष्ट विद्वान् श्रेष्ठ हैं, विशिष्ट विद्वानों में कर्त्तव्यनिष्ट बुद्धि अथवा व्यवसायात्मिका बुद्धि रखने वाले श्रेष्ठ हैं, कर्त्तव्यनिष्ठ बुद्धि रखने वालों में तदनुकूल आचरण करने वाले श्रेष्ठ हैं और आचरण करने वालों में मोक्ष के अधिकारी ब्रह्मज्ञानी श्रेष्ठ हैं। **वस्तुतः इस स्तर तक पहुँचने वाले ब्राह्मण संन्यास के अधिकारी हैं। ऐसे ही आप्त पुरुषों को संन्यास ग्रहण करके उपदेश करने का अधिकार है।**

संन्यासाश्रम और नारी

सत्यार्थ प्रकाश के पंचम समुल्लास में मनुस्मृति के हवाले से स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि व्यक्ति वानप्रस्थ में प्रवेश करते समय अपनी धर्मपत्नी को या तो पुत्रों के पास छोड़ दे, या साथ में रखे तो दोनों यौनिक संयम से रहें। इससे सिद्ध होता है कि स्वामी दयानन्द और अन्य शास्त्रकारों के

मत से स्त्रियाँ भी वानप्रस्थिनी हो सकती हैं। परन्तु संन्यास प्रकरण में ऐसा कोई स्पष्ट संकेत नहीं है कि जिससे यह सिद्ध हो सके कि पुरुषों के समान नारियाँ भी संन्यास धारण कर सकती हैं।

इस सम्बन्ध में विचार यह है कि संन्यास शब्द से दो भावनाएँ प्रकट होती हैं-

(१) किसी उद्देश्य की प्राप्ति की अभिकांक्षा से उत्पन्न सभी प्रकार के काम्य कर्मों का त्याग एवं (२) किसी विशिष्ट जीवन ढंग (आश्रम) का अनुसरण, जिसके बाह्य लक्षण हैं- दण्ड, काषाय, वस्त्र, कमण्डलु आदि का धारण करना। जिसमें प्रवेश करने के लिए एक विधि और कर्मकाण्ड सम्पन्न करना पड़ता है। (धर्मशास्त्र का इतिहास-भाग प्रथम) इन दोनों प्रकार के संन्यासों में पहले प्रकार का संन्यास अर्थात् काम्य कर्मों का त्याग कर गृह में या किसी महिला-आश्रम की स्थापना कर उसमें, त्याग और तपस्वी का जीवन बिताना ही नारियों के लिए उपयुक्त संन्यास हो सकता है। इसमें रहकर स्त्रियों को पढ़ाना, लिखाना, उनमें व्याप्त कुरीतियाँ मिटाना और उनको अपने नारी कर्त्तव्य अधिकार के प्रति जागरूक करना आदि सेवा कार्य किये जा सकते हैं। सम्भवतः इसी भावना से स्वामी दयानन्द ने लिखा होगा- जिस पुरुष वा स्त्री को विद्या धर्म वृद्धि और सब संसार का उपकार करना ही प्रयोजन हो वह विवाह न करे। जैसे पंचशिखादि पुरुष और गार्गी आदि स्त्रियों ने किया था। (सत्यार्थ प्रकाश ५ समु.)

फिर भी यदि स्त्रियाँ पुरुषों के समान संन्यास लेना चाहती हों तो अवश्य ले सकती हैं परन्तु इन संन्यासिनियों का कार्य-क्षेत्र और रहन-सहन आदि पुरुष संन्यासियों से पृथक् होगा।

□□□

सम्पादक- अशोक आर्य

स्वास्थ्य

नींद क्यों रात भर नहीं आती !

अनेक लोगों को नींद न आने की शिकायत होती है। वे देर तक करवट बदलते रहते हैं, पर तमाम कोशिशों के बाद भी सो नहीं पाते। बहुत बाद में जब नींद आती भी है तो अधूरी रहती है और उसका पूरा लाभ नहीं मिलता। लम्बे समय तक यह स्थिति रहने पर वे अनिद्रा रोग से ग्रस्त हो जाते हैं। इससे अनेक समस्यायें पैदा होती हैं।

नींद न आने के कई कारण हो सकते हैं। सबसे बड़ा कारण है अनावश्यक रूप से चिंतित रहना। इसका समाधान यह है कि सोने जाते समय अपनी सारी चिंताओं और समस्याओं को शयन कक्ष के बाहर ही छोड देना चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि सुबह मुलाकात करेंगे। आप देखेंगे कि सुबह तक उनमें से आधी चिन्तायें और समस्यायें गायब हो जायेंगी। फिर भी यदि कोई विकट समस्या हो तो उसके समाधान के लिए दिन में ही विचार या चिंतन करना चाहिये। उसके लिए रातों की नींद खराब करना व्यर्थ है। अनिद्रा का दूसरा कारण पर्याप्त मेहनत न करना होता है। यदि हम दिनभर परिश्रम करेंगे तो रात्रि को अपने तय समय पर हमें नींद अवश्य आयेगी और ऐसी नींद गहरी भी होती है, जिससे प्रातःकाल शरीर एकदम तरोताजा होता है।

बहुत से लोग नींद की गोलियाँ खाकर सोते हैं। यह बहुत खतरनाक है। नींद की गोलियों से ऐसा नशा आता है जो हमारे पूरे शरीर को शिथिल कर देता है। वह नींद नहीं है बल्कि एक प्रकार की बेहोशी होती है। इससे आगे चलकर बहुत कुपरिणाम मिलते हैं।

योग चिकित्सा में एक आसन ऐसा है जिसको यदि सोते समय कर लिया जाये तो बहुत गहरी नींद आती है। इसका नाम है 'ब्रह्मचर्यासन'। यह वज्रासन से मिलता जुलता है लेकिन इसमें पैर के पंजों को भीतर के बजाय बाहर की तरफ मोड़ा जाता है और नितम्बों को जमीन पर टिकाया जाता है जैसा कि साथ के चित्र में दिखाया गया है।

इस आसन से डरावने सपने आने तथा स्वप्नदोष की शिकायत भी दूर होती है। सोने से ठीक पहले लघुशंका से निवृत्त होकर बिस्तर पर ही इसे २ से ४ मिनट तक करना चाहिए।

विजय कुमार सिंघल
टाईप ५, निदेशक बंगला, जीपीओ कैम्पस
सिविल लाइन्स, इलाहबाद (उत्तरप्रदेश) २११००१

□□□

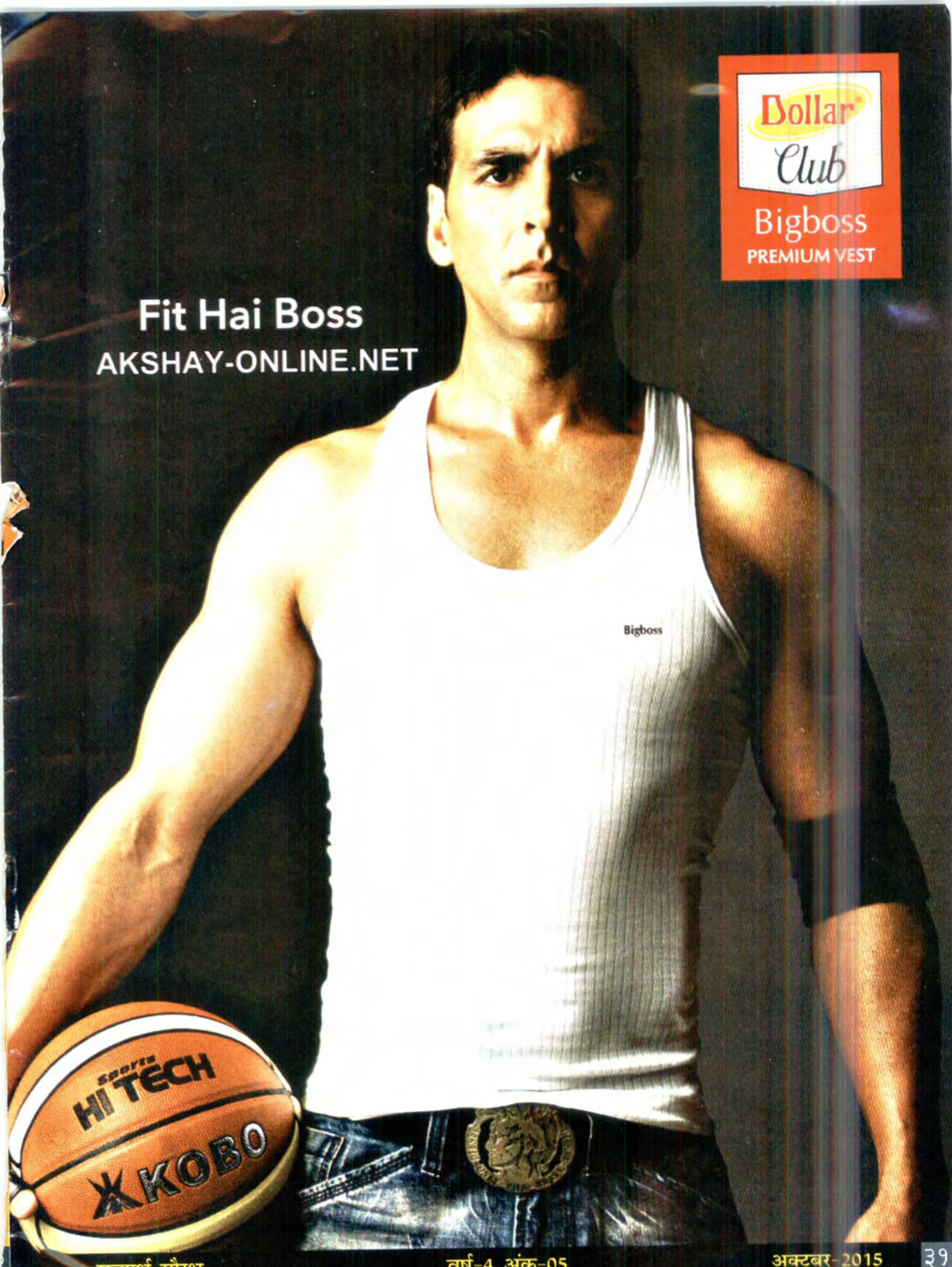
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
AKSHAY-ONLINE.NET
Bigboss
Sports
HI TECH
KOBO

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

३१ अक्टूबर से २ नवम्बर २०१५

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक– प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक– प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय– शास्त्री सर्कल, पोस्ट ऑफिस, उदयपुर